डाक पंजीयन क्रमांक: म.प्र./4-474/2024-26

भोपाल
18 मई 2026 सोमवार

आज का मौसम
42.8 अधिकतम
28.0 न्यूनतम

बेबाक खबर हर दोपहर
दोपहर मेट्रो

Page-7

होर्मुज से दक्षिण चीन सागर तक... नए आर्थिक शीत युद्ध में प्रवेश करती दुनिया?

जियो पॉलिटिकल

एनालिस्ट
राजेश सिरोठिया

दुनिया इस समय ऐसे दौर में प्रवेश करती दिखाई दे रही है जहां सैन्य संघर्ष, आर्थिक प्रतिबंध, ऊर्जा संकट और समुद्री मार्गों पर नियंत्रण, सब एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। होर्मुज स्ट्रेट से लेकर दक्षिण चीन सागर तक बढ़ते तनाव यह संकेत दे रहे हैं कि दुनिया शायद एक नए प्रकार के आर्थिक शीत युद्ध की ओर बढ़ रही है। पश्चिम एशिया में ईरान को लेकर बढ़ते तनाव ने वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा की चिंता बढ़ा दी है। दुनिया के बड़े हिस्से का तेल व्यापार होर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरता है। यदि यहां किसी बड़े संघर्ष की स्थिति बनती है, तो तेल कीमतों में भारी उछाल आ सकता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर असर पड़ सकता है।

अमेरिका लंबे समय से इस क्षेत्र में अपनी सैन्य मौजूदगी बनाए हुए है, क्योंकि वह ऊर्जा आपूर्ति मार्गों को वैश्विक आर्थिक स्थिरता के लिए बेहद अहम मानता है। दूसरी तरफ चीन अपनी ऊर्जा जरूरतों के कारण पश्चिम एशिया पर लगातार निर्भर होता जा रहा है। यही वजह है कि बीजिंग अब केवल आर्थिक नहीं बल्कि रणनीतिक रूप से भी इस क्षेत्र में सक्रिय दिखाई देता है। उधर, एशिया में दक्षिण चीन सागर एक नए तनाव क्षेत्र के रूप में उभर रहा है। चीन इस समुद्री क्षेत्र पर अपना व्यापक दावा करता है, जबकि फिलीपींस, वियतनाम और अन्य देश इसका विरोध करते रहे हैं। अमेरिका समुद्री स्वतंत्रता के नाम पर यहां अपनी सैन्य गतिविधियां बढ़ाता रहा है।

असल में दक्षिण चीन सागर केवल समुद्री सीमा विवाद का मामला नहीं है। यह दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक समुद्री मार्गों में शामिल है। हर साल खरबों डॉलर का व्यापार इसी रास्ते से गुजरता है। यदि यहां तनाव बढ़ता है, तो वैश्विक सप्लाई चेन पर गहरा असर पड़ सकता है। यही कारण है कि अब समुद्री मार्ग भी भू-राजनीतिक हथियार बनते जा रहे हैं। होर्मुज में तेल और दक्षिण चीन सागर में व्यापार दोनों ही वैश्विक अर्थव्यवस्था की धड़कन हैं। इस पूरे परिदृश्य में रूस, चीन, ईरान और अमेरिका अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं। आर्थिक प्रतिबंध, तकनीकी नियंत्रण, सप्लाई चेन दबाव और सैन्य गठबंधन, सब मिलकर एक नए प्रकार की वैश्विक प्रतिस्पर्धा को जन्म दे रहे हैं।

रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का नया युग

यह संघर्ष पारंपरिक शीत युद्ध से अलग है। अब लड़ाई केवल हथियारों की नहीं बल्कि डेटा, ऊर्जा, चिप्स, समुद्री मार्गों और वित्तीय नेटवर्क की भी है। दुनिया धीरे-धीरे दो आर्थिक और रणनीतिक ध्रुवों में बंटती दिखाई दे रही है। एक तरफ अमेरिका और उसके सहयोगी देश हैं, तो दूसरी तरफ चीन, रूस और उनके करीबी साझेदार। संभव है आने वाले वर्षों में वैश्विक राजनीति का सबसे बड़ा सवाल यही हो कि क्या दुनिया खुली वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौर से निकलकर नियंत्रित आर्थिक गुटों और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के नए युग में प्रवेश कर चुकी है?

चेन्नई-हैदराबाद, समय : शाम 7.30 बजे

न्यूज विंडो

अमेरिका के एयर शो में दो विमान टकराए, क्रू सुरक्षित

वाशिंगटन डीसी। अमेरिका में दो ग्रोलर फाइटर जेट क्रैश हो गए। हादसा इडाहो स्थित माउंटेन होम एयरफोर्स बेस पर एयर शो के दौरान हुआ। दोनों विमानों में सवार सभी 4 क्रू मेंबर हादसे से कुछ सेकेंड पहले सुरक्षित बाहर निकल गए। माउंटेन होम एयरफोर्स बेस के प्रवक्ता ने कहा कि हादसे के तुरंत बाद एयरफोर्स बेस को लॉकडाउन कर दिया गया। दिन के बाकी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए। मिड-एयर टक्कर में आमतौर पर बाहर निकलने होने का मौका नहीं मिलता लईकिन इस मामले में दोनों विमान टकराने के बाद कुछ देर तक जुड़े रहे, जिससे क्रू निकल गया।

भारतीय सेना के मानद अफसर बने ईशान खट्टर

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर ईशान खट्टर को भारतीय सेना की दिग्गज 45 कैवेलरी रेजिमेंट की मानद सदस्यता दी गई। यह सम्मान बहुत कम लोगों को मिलता है और इसे बेहद प्रतिष्ठित माना जाता है। ईशान खट्टर ने इस खास पल की तस्वीरें और वीडियो अपने इंस्टाग्राम पर शेयर की, जिसके बाद उनके फैंस और फिल्म जगत के लोग उन्हें लगातार बधाई दे रहे हैं। 2023 में आई उनकी फिल्म पिप्पा में बेहतरीन काम करने के लिए उन्हें यह उपाधि दी गई। पिप्पा एक बायोपिक है.जो फिल्म भारत-पाकिस्तान के 1971 के युद्ध पर आधारित है, इसमें बांग्लादेश को आजाद करवाया गया था। ईशान ने कैप्टन बलराम सिंह मेहता का किरदार निभाया था।

ट्रेन की बोगी से मिली महिला की सिर कटी लाश

लखनऊ। यहां एक ट्रेन में महिला की सिरकटी लाश मिलने से सनसनी फ़ैल गई। छपरा से गोमती नगर के बीच 20 स्टेशनों के सीसीटीवी फुटेज खंगालने में जीआरपी पुलिस जुटी है। छपरा गोमती नगर एक्सप्रेस 20 स्टेशनों से गुजरते हुए 12 घंटे का सफ़र पूरा करती है। इसी की ऐसी -1 कोच में लाश मिली। जीआरपी ट्रेन के अंदर रूटीन चेकिंग कर रही थी, इस दौरान कोच में एक लावारिस बॉक्स और एक बैग मिला। बॉक्स में महिला की सिर कटी लाश का धड़ मिला और बैग में कटे हुए हाथ ,पैर मिले । इलेक्ट्रॉनिक कटर या बेहद धारदार हथियार से शव काटे जाने का शक जताया जा रहा है।

टेस्टिंग एजेंसी पर सवाल... मॉनिटरिंग का था जिम्मा, मिलीभगत की आशंका

केमेस्ट्री और बायलॉजी टीचर के बाद अब एनटीए के अफसर पर सीबीआई की नजर

ब्यूटीशियन मनीषा वाघमारे को 6 दिन पहले मिल गए थे पेपर

नईदिल्ली. एजेंसी

नीट पेपर लीक की कड़ियां जोड़ने में जुटी सीबीआई की टीम को सफलता मिलती दिख रही है। अभी तक पेपर सेट करने वाले शिक्षक और बाहरी मास्टर माइंड की भूमिका सामने आई थी लेकिन अब इस गिरोह में नेशनल टेस्टिंग एजेंसी के भीतर के लोगों के शामिल होने के सबूत मिल रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक सीबीआई को एनटीए के एक जिम्मेदार अफसर के इस मामले में शामिल होने का पता चला है। यह अफसर पुणे से गिरफ्तार की गई ब्यूटीशियन मनीषा वाघमारे के संपर्क में था। इस मामले में पहले केमिस्ट्री प्रोफेसर पीवी कुलकर्णी और फिर बॉटनी लेक्चरर मनीषा मांधरे की गिरफ्तारी हुई थी।

पता चला है कि मनीषा वाघमारे को एनटीए अफसर और अन्य आरोपियों के जरिए नीट परीक्षा से 6 दिन पहले ही प्रश्नपत्र और उसके उत्तर मिल गए थे। सूत्रों का कहना है कि केमिस्ट्री प्रोफेसर पीवी कुलकर्णी के ही जरिए ही मनीषा एनटीएअफसर के संपर्क में आई। ये अफसर उनमें से हो सकते हैं, जिनके पास पेपर फाइनल करने से लेकर एक्सपर्ट कमेटी बनाने तक की जिम्मेदारी होती है।

सीबीआई जांच कर रही है कि लीक हुआ पेपर क्या ओरिजनल पेपर की फोटोकॉपी है या इसे फोटो खींचकर लीक किया गया था। ये जांच इसलिए भी हो रही है, क्योंकि एनटीए ऑफिस में जहां पेपर सेट किया जाता है, वहां इलेक्ट्रॉनिक गैजेट या पेन जैसा कोई ऐसा सामान ले जाने की इजाजत नहीं है जिसमें कैमरा छिपाया जा सके, इसलिए फोटो कॉपी निकालना या फोटो खींच पाना आसान नहीं। ऐसे ही गोपनीय क्षेत्र में में एक्सपर्ट प्रोफेसर और लेक्चरर पेपर सेट करते हैं, जबकि एनटीए अफसरों की जिम्मेदारी उन पर नजर रखने की होती है। लिहाजा एनटीए स्टाफ के शामिल हुए बिना पेपर लीक होना नामुमकिन है, इसलिए अब वहां के अफसर भी सवालों के घेरे में हैं। शक इसलिए भी बढ़ गया है, क्योंकि अब तक जिन 9 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है, उनमें से ज्यादातर ने अपने फोन की चैट के साथ फोटो गैलरी भी डिलीट की है। लैपटॉप से भी कई फाइलें डिलीट मिली हैं। आरोपी ब्यूटीशियन मनीषा वाघमारे और दलाल धनंजय लोखंडे के फोन से काफी डेटा डिलीट है। सीबीआई इनके डिजिटल एविडेंस जुटा रही है।

मनीषा गुरुनाथ

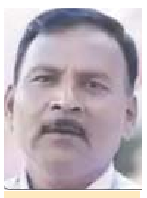

पीवी कुलकर्णी

मनीषा वाघमारे

20 अप्रैल तक प्रिंटिंग, 27 को पेपर लीक !

पेपर के दो सेट बनाए जाते हैं, लेकिन एग्जाम में इनमें से कौन सा सेट जाएगा, इस पर आखिरी फैसला एनटीए चीफ का होता है। पेपर के दो सेट फाइनल होने के बाद 13 भाषाओं में उनका अनुवाद किया जाता है। इसके बाद दोनों सेट प्रिंटिंग के लिए भेजे जाते हैं। बताया जा रहा है कि 15-20 अप्रैल के बीच में दोनों पेपर की प्रिंटिंग हुई थी। इसके बाद ट्रांसपोर्ट के जरिए इसे परीक्षा केंद्रों के आसपास के बैंक लॉकर में सुरक्षित रखा गया। यहां से 3 मई को पेपर एग्जाम सेंटर पहुंचा। हालांकि, इससे पहले 27 अप्रैल को ही पेपर लीक होकर ब्यूटीशियन मनीषा वाघमारे तक पहुंच चुका था।

कहां से आए फिजिक्स के सवाल?

सीबीआई से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, मनीषा वाघमारे ही सबसे पहले पेपर सेट करने वाले एक्सपर्ट्स और एनटीए अफसर के संपर्क में आई। इसी ने प्रोफेसर मनीषा मांधरे को घर पर क्लास लगाकर एग्जाम में आने वाले बायोलॉजी के सवाल-जवाब स्टूडेंट्स को बताने के लिए तैयार किया। वहीं, प्रोफेसर पीवी कुलकर्णी ने भी क्लास लगाकर स्टूडेंट्स को केमिस्ट्री के सवाल बताए। इसके बदले पीवी कुलकर्णी को मनीषा वाघमारे के जरिए लाखों रुपए कैश मिले, जबकि बाकी की रकम अकाउंट में ट्रांसफर की गई। इस केस में अभी तक केमिस्ट्री और बॉटनी के प्रोफेसर अरेस्ट हुए हैं। ऐसे में अब सवाल यही है कि अगर सिर्फ इन दो विषयों के पेपर सेट करने वाले लीक में शामिल थे, तो फिजिक्स के सवाल कैसे लीक हुए। फिजिक्स के 15 सवाल मैच हुए है।

नौकरी के नाम पर रिश्वत

बॉडी बिल्डिंग रेफरी गिरफ्तार

रायपुर, एजेंसी

रेलवे में क्लर्क बनाने के नाम पर रिश्वत लेते सीबीआइ की रायपुर टीम ने दो रेल कर्मचारियों को गिरफ्तार किया है। आरोपितों में अंतरराष्ट्रीय बॉडी बिल्डिंग रेफरी व इंजीनियरिंग विभाग के डीएमएस बी. राजशेखर राव और महिला वेटलिफ्टर व टीटीई रामालक्ष्मी शामिल हैं। दोनों को एक महिला अभ्यर्थी से पांच लाख रुपये की नकद रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया है। कार्रवाई के दौरान दोनों के ठिकानों पर कई घंटों तक तलाशी ली गई, जिसमें घर से लाखों रुपये कैश और अहम दस्तावेज बरामद हुए हैं। डीआरएम कार्यालय रायपुर ने भी इस कार्रवाई की पुष्टि की है। अब आगे की जांच की जा रही है।

दिल्ली हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच सुनेगी केजरीवाल के खिलाफ अवमानना केस

नईदिल्ली, एजेंसी

आम आदमी पार्टी चीफ अरविंद केजरीवाल की मांग पूरी हो गई है। दिल्ली शराब घोटाला और अवमानना केस से दिल्ली हाईकोर्ट की जज जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा के अलग होने के बाद उनका शराब घोटाला केस जस्टिस मनोज जैन और अवमानना केस दिल्ली हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच सुनेगी। पिछली सुनवाई में जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा ने इस केस से खुद को अलग कर लिया था। सीबीआई ने अरविंद केजरीवाल और अन्य आरोपियों को ट्रायल कोर्ट द्वारा दी गई डिस्चार्ज राहत को चुनौती दी है इस मामले पर अब कल यानी मंगलवार को सुनवाई होगी। ससे पहले जस्टिस स्वर्णा कांता शर्मा इस मामले की सुनवाई कर रही थीं। केजरीवाल के खिलाफ अपराधिक अवमानना मामले की सुनवाई अब दिल्ली हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच में होगी। यह मामला तब शुरू हुआ था, जब जस्टिस स्वर्णकांत ने अपने खिलाफ लगाए गए 'मानहानिकारक और बदनाम करने वाले' आरोपों का संज्ञान लिया था।

राहुल-प्रियंका की मौजूदगी में वीडी सतीशन ने ली शपथ

तिरुवनंतपुरम। वीडी सतीशन केरलम के 13वें मुख्यमंत्री के रूप में आज शपथ ली। राज्यपाल अर्लेकर ने सीएम के बाद उनकी कैबिनेट के 20 और मंत्रियों को भी पद की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में राहुल और प्रियंका गांधी के अलावा कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी मौजूद रहे। पूर्व मुख्यमंत्री पी विजयन, बीजेपी नेता राजीव चंद्रशेखर समेत सभी कांग्रेस शासित राज्यों के सीएम भी कार्यक्रम में शामिल हुए। विदेश में होने के कारण शशि थरूर नहीं आए।

इंदौर मेडिकल कॉलेज में पांचवीं मंजिल से गिरे डॉक्टर की मौत

इंदौर, एजेंसी

एमजीएम मेडिकल कॉलेज के बॉयज हॉस्टल में रविवार देर रात एक पीजी डॉक्टर की मौत हो गई। डॉक्टर का शव हॉस्टल की पांचवीं मंजिल से गिरने के बाद परिसर में मिला। पुलिस आत्महत्या और हादसा, दोनों पहलुओं से जांच कर रही है। रविवार-सोमवार की दरमियानी रात करीब 2 बजे एमजीएम बॉयज हॉस्टल परिसर के ब्लॉक नंबर-5 के पास डॉक्टर का शव मिला।

डॉ. अमन पटेल (30) मेडिसिन विभाग में फाइनल ईयर के 2023 बैच के पीजी स्टूडेंट थे। कुछ महीनों में उनका पीजी कोर्स पूरा होने वाला था। उन्होंने एमबीबीएस की पढ़ाई जबलपुर से की थी। वह जबलपुर के ही रहने वाले थे। पिता का नाम सुशील पटेल है। सूचना मिलते ही संयोगितागंज पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। घटनास्थल से सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। पुलिस का कहना है कि आत्महत्या और हादसे दोनों बिंदुओं पर जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और अन्य साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। एमजीएम मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने बताया कि डॉ. अमन पटेल शांत, होनहार और समर्पित छात्र थे। उनके निधन से कॉलेज और चिकित्सा क्षेत्र में शोक का माहौल है।

अंदर खास

खुद की आग में फिर झुलसेगा मिडिल ईस्ट?
यूएस मीडिया का दावा- ईरान पर हमला कर सकते हैं ट्रंप

नई शर्तों और धमकी के साथ पल-पल बदलते ट्रम्प : पेज -8

आज का कार्टून

मेट्रो एंकर

काम की खबर... कोर्ट ने कहा - मेडिक्लेम का फायदा प्रीमियम देकर खरीदा जाता है

दुर्घटना मुआवजे से नहीं काट सकते मेडिक्लेम से मिली राशि - सुप्रीम कोर्ट

नईदिल्ली, एजेंसी

एक अहम फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि किसी दुर्घटना पीड़ित को मेडिक्लेम या मेडिकल इंश्योरेंस पॉलिसी के तहत मिली रकम को मोटर वाहन अधिनियम के तहत दिए गए मुआवजे से नहीं काटा जा सकता। कोर्ट ने कहा कि ये दोनों फ़ायदे अलग-अलग कानूनी दायरे में आते हैं। जस्टिस संजय करोल और जस्टिस विपुल एम.पंचोली की बेंच ने न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की अपील इसी तर्क के साथ खारिज कर दी। इस अपील में बॉम्बे हाईकोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी गई थी, जिसमें कहा गया था कि मोटर दुर्घटना दावा अधिकरणों द्वारा दिए गए मुआवजे से मेडिक्लेम रीइम्बर्समेंट की रकम नहीं काटी जा सकती।

सुप्रीम कोर्ट के सामने मुख्य कानूनी मुद्दा यह था कि क्या कोई दावा करने वाला व्यक्ति, जिसे पहले ही अपनी निजी मेडिक्लेम पॉलिसी के तहत मेडिकल खर्चों का रीइम्बर्समेंट मिल चुका है, मोटर दुर्घटना की कार्यवाही में उन खर्चों के लिए दोबारा मुआवजे का दावा कर सकता है? या फिर क्या ऐसा करना एक दोहरा फायदा माना जाएगा, जिसकी इजाजत नहीं है? इंश्योरेंस कंपनी की दलील खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा कि मेडिक्लेम पॉलिसी ऐसा अनुबंध-आधारित फायदा है, जिसे कोई व्यक्ति प्रीमियम देकर खरीदता है, जबकि मोटर वाहन अधिनियम के तहत मिलने वाला मुआवज़ा एक कानूनी अधिकार है, जो दुर्घटना का कारण बनने वाले गलत काम के चलते मिलता है।

सुप्रीम कोर्ट कोर्ट ने कहा, मेडिक्लेम पॉलिसी एक ऐसी पॉलिसी है, जिसे कोई व्यक्ति जीवन की अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए खरीदता है, ताकि किसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की स्थिति में उसके पास एक आर्थिक सहारा मौजूद हो। कोर्ट ने यह भी कहा कि किसी दावा करने वाले व्यक्ति को सिर्फ इसलिए मोटर वाहन एक्ट का मुआवजा न देना कि उसने समझदारी दिखाते हुए मेडिकल इंश्योरेंस ले रखा था, उसके साथ अन्याय होगा। ऐसा करके उसे उन प्रीमियमों के लिए सजा दी जाएगी, जिनका भुगतान वह सालों से करता आ रहा है।

दोहरा फायदा नहीं कहा जा सकता

सुप्रीम कोर्ट बेंच ने तर्क दिया कि अगर इंश्योरेंस कंपनी की दलील मान ली जाती है तो एक अजीबोगरीब स्थिति पैदा हो जाएगी। ऐसी स्थिति में या तो मेडिक्लेम इंश्योरेंस कंपनी, या फिर दुर्घटना करने वाले वाहन की इंश्योरेंस कंपनी को दावा करने वाले व्यक्ति की कीमत पर गलत फायदा मिल जाएगा। कोर्ट ने कहा, सिर्फ इसलिए कि ये दोनों चीजें एक जैसी या मिलती-जुलती लगती हैं, उन्हें दोहरा फायदा नहीं कहा जा सकता। कोर्ट ने इस बात पर जोर दिया कि मेडिक्लेम रीइम्बर्समेंट तो सिर्फ उन प्रीमियमों का ही नतीजा है, जिनका भुगतान पहले ही किया जा चुका है, जबकि मोटर वाहन अधिनियम के तहत मिलने वाला मुआवजा एक कल्याणकारी कानून के तहत दिया जाने वाला उचित मुआवजा है।

अनदेखी : मालीखेड़ी में पेड़ों पर लटक रहे तार

भोपाल के माली खेड़ी क्षेत्र में बिजली विभाग की गंभीर लापरवाही सामने आ रही है। इलाके की सड़कों पर खुलेआम बिजली के मीटर और डीपीओ लगे हुए हैं, जबकि बिजली के तार नीचे लटक रहे हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि आए दिन शॉर्ट सर्किट की घटनाएं हो रही हैं, जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। इसके बावजूद बिजली विभाग इस समस्या की ओर ध्यान नहीं दे रहा है। क्षेत्रवासियों के अनुसार कई जगहों पर बिजली के तार इतने नीचे आ गए हैं कि राहगीरों और वाहन चालकों को खतरा बना रहता है। बारिश और तेज गर्मी के दौरान स्थिति और अधिक खतरनाक हो जाती है। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि कई बार शिकायत करने के बावजूद विभाग द्वारा केवल औपचारिक कार्रवाई की जाती है, स्थायी समाधान नहीं किया जा रहा। माली खेड़ी के रहवासियों को बिजली कटौती और लो-वोल्टेज की समस्या से भी लगातार जूझना पड़ रहा है। घंटों बिजली बंद रहने से लोगों का दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है। गर्मी के मौसम में छोटे बच्चे, बुजुर्ग और मरीज सबसे अधिक परेशान हैं। लोगों का कहना है कि बिजली व्यवस्था पूरी तरह अव्यवस्थित हो चुकी है।

पांच नंबर मार्केट में 650 करोड़ से बनने हैं आठ टावर

दो साल तक पिछड़ चुका है प्रोजेक्ट, अब अगले महीने से काम शुरू होने के आसार

20-20 मंजिला टावर के साथ 125 दुकानें और कमर्शियल हब तैयार होगा

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

कानूनी दांव-पेच और प्रशासनिक देरी में दो साल तक फंसा रहा पांच नंबर स्थित आरएसएस मार्केट री-डेवलपमेंट प्रोजेक्ट अब आखिरकार जमीन पर उतरने जा रहा है। मध्य प्रदेश की री-डेवलपमेंट पालिसी-2023 के तहत प्रदेश के पहले बड़े प्रोजेक्ट का निर्माण कार्य अगले महीने से शुरू होने की तैयारी है। प्रोजेक्ट की सबसे बड़ी बाधा मानी जा रही 65 दुकानों की शिफ्टिंग का रास्ता भी अब साफ हो गया है। व्यापारियों और हाउसिंग बोर्ड के बीच अनुबंध हो चुका है। अगले हफ्ते से दुकानों को अस्थायी शेड में स्थानांतरित करने की प्रक्रिया शुरू होगी। हाउसिंग बोर्ड के अधिकारियों के अनुसार निर्माण एजेंसी का चयन और टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। बोर्ड की अगली बैठक में अंतिम मंजूरी मिलते ही निर्माण शुरू कर दिया जाएगा।

करीब 650 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले इस प्रोजेक्ट में 45 साल पुराने जर्जर मार्केट की जगह 20-20 मंजिला आठ आधुनिक टावर तैयार किए जाएंगे। हाउसिंग बोर्ड ने प्रोजेक्ट को 42 महीनों में पूरा करने का लक्ष्य तय किया है।

पांच नंबर मार्केट की 65 दुकानें की शिफ्टिंग अगले हफ्ते शुरु हो जाएगी। जून से शुरू होगा 650 करोड़ का री-डेवलपमेंट प्रोजेक्ट।

अब बनेगा नया कमर्शियल हब

री-डेवलपमेंट के बाद यह क्षेत्र एमपी नगर और न्यू मार्केट की तर्ज पर बड़ा कमर्शियल और रिहायशी हब बनेगा। यहां 125 नई दुकानें तैयार की जाएंगी। प्रोजेक्ट में आधुनिक सुविधाओं से लैस स्विमिंग पूल, योगा सेंटर और बच्चों के लिए प्ले एरिया भी बनाया जाएगा। कुल 380 फ्लैट्स में से 165 पुराने आवंटियों को दिए जाएंगे, जबकि 215 फ्लैट नए खरीदारों के लिए उपलब्ध रहेंगे। हाउसिंग बोर्ड ईई प्रदीप हडाऊ ने बताया कि टेंडर हो चुके है, अगले महीने से काम शुरू होगा। व्यापारियों के साथ अनुबंध हो गया है। काम की शुरूआत वहां से करेंगे, जहां बहुमंजिला इमारत खाली करवाई गई थी।

डिजाइन बदलाव से अटका था प्रोजेक्ट

प्रोजेक्ट की शुरुआत से ही इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। शुरुआती चरण में 11 लोगों ने याचिका दायर कर योजना को चुनौती दी थी, जिससे मामला लंबे समय तक उलझा रहा। इसी दौरान हाउसिंग बोर्ड ने प्रोजेक्ट के इंटरनल डिजाइन में बड़ा बदलाव किया। पहले यहां पांच-बीएचके फ्लैट बनाने की योजना थी, लेकिन बाद में इसे बदलकर एक से चार-बीएचके तक सीमित कर दिया गया। डिजाइन में बदलाव के कारण भवन अनुज्ञा की फाइल नगर निगम में महीनों तक लंबित रही।

रेलवे ने उठाया बड़ा कदम, 16 करोड़ से प्राइवेट कंपनी करेगी ट्रैक मशीनों का मेंटेनेंस

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

रेलवे ने ट्रैक मरम्मत और देखरेख से जुड़ी मशीनों के संचालन और मेंटेनेंस को लेकर बड़ा फैसला लिया है। अब यह जिम्मेदारी निजी एजेंसी को सौंपी जाएगी। रेलवे का मानना है कि इससे ट्रैक मेंटेनेंस का काम अधिक तेज, व्यवस्थित और सुरक्षित तरीके से हो सकेगा।

जानकारी के अनुसार इस परियोजना पर करीब 16.76 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। योजना को अगले 24 महीनों यानी दो वर्षों में पूरा किया जाएगा। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि मशीनों की बेहतर देखरेख से ट्रैक मरम्मत कार्य में रुकावट कम आएगी और काम की गति बढ़ेगी।

यात्रियों को होगा सीधा फायदा

रेलवे के अनुसार इस योजना से ट्रैक मरम्मत का कार्य तय समय पर पूरा हो सकेगा, जिससे ट्रेनों की लेटलतीफी कम होने की उम्मीद है। साथ ही ट्रैक की गुणवत्ता और सुरक्षा में सुधार होगा, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना भी घटेगी। अधिकारियों का कहना है कि मशीनों की समय पर देखरेख होने से उनकी कार्यक्षमता और आयु दोनों बढ़ेंगी। इससे रेलवे के लंबे समय के खर्च में भी कमी आएगी और कामकाज में पारदर्शिता व दक्षता बढ़ेगी।

आधुनिक मशीनों पर निर्भर है ट्रैक सुरक्षा

रेलवे ट्रैक की मरम्मत और रखरखाव के लिए ट्रैक पैकिंग मशीन, बैलास्ट क्लीनिंग मशीन और अन्य आधुनिक तकनीकी उपकरणों का उपयोग करता है। ये मशीनें रेलवे ट्रैक को मजबूत और सुरक्षित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालांकि समय पर मरम्मत और तकनीकी देखभाल नहीं होने के कारण कई बार मशीनें खराब हो जाती थीं, जिससे ट्रैक मेंटेनेंस कार्य प्रभावित होता था। इसी समस्या को देखते हुए रेलवे ने विशेषज्ञ निजी एजेंसी की सेवाएं लेने का निर्णय किया है।

गर्मियों में भोपाल के यात्रियों को बड़ी राहत... रानी कमलापति होकर चलेंगी विशाखापट्टनम की दो समर स्पेशल ट्रेनें

ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान ट्रेनों में बढ़ती भीड़ और लंबी वेटिंग के बीच रेलवे ने यात्रियों को बड़ी राहत दी है। रेलवे प्रशासन ने रानी कमलापति स्टेशन होकर विशाखापट्टनम-हजरत निजामुद्दीन और विशाखापट्टनम-फरीदाबाद समर स्पेशल ट्रेनों के संचालन का निर्णय लिया है। इन ट्रेनों के चलने से भोपाल सहित मध्य भारत के यात्रियों को उत्तर भारत की ओर यात्रा के लिए अतिरिक्त सुविधा मिलेगी। ट्रेन संख्या 08513 विशाखापट्टनम-हजरत निजामुद्दीन विशेष ट्रेन 21 मई को विशाखापट्टनम से रवाना होकर 23 मई को हजरत निजामुद्दीन पहुंचेगी। यह ट्रेन रानी कमलापति स्टेशन पर रात 10:20 बजे पहुंचेगी और 10:25 बजे रवाना होगी। वापसी में ट्रेन संख्या 08514, 24 मई को हजरत निजामुद्दीन से चलेगी और 26 मई को विशाखापट्टनम पहुंचेगी। वहीं ट्रेन संख्या 08515 विशाखापट्टनम-फरीदाबाद विशेष ट्रेन 21 मई को चलेगी और 23 मई को फरीदाबाद पहुंचेगी। यह ट्रेन रानी कमलापति स्टेशन पर दोपहर 3:45 बजे आएगी। वापसी दिशा में ट्रेन संख्या 08516, 25 मई को फरीदाबाद से रवाना होगी। रेलवे अधिकारियों के अनुसार इन विशेष ट्रेनों के संचालन से यात्रियों की भीड़ नियंत्रित करने में मदद मिलेगी और गर्मी की छुट्टियों में यात्रा अधिक सुगम हो सकेगी।

गर्मियों की छुट्टी में हुनर सीख रहे 475 बच्चे

संतनगर. दोपहर मेट्रो।

साधु वासवानी स्कूल में बाल अभिव्यक्ति शिविर का आयोजन किया गया है। इस ग्रीष्मकालीन शिविर में विभिन्न विद्यालयों के लगभग 475 बच्चे अलग-अलग रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेकर अपनी प्रतिभा को निखार रहे हैं।

शिविर का अवलोकन सुरेश राजपाल, धर्मप्रकाश मोटवानी, वसंत चेलानी, मधु लालवानी एवं किरण वाधवानी ने किया। हैप्पी ग्रुप से दिनेश वाधवानी, राजा इसरानी व उनके साथी तथा कपड़ा एसोसिएशन के सदस्यगण भी शिविर में पहुंचे। अतिथियों ने कहा कि ऐसे आयोजनों से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निखरता है और वे अपनी कला को शौक के साथ-साथ भविष्य में आय का साधन भी बना सकते हैं। इस अवसर पर कपड़ा एसोसिएशन ने बच्चों को पुरस्कार के रूप में पेन, फ्रूटी और चॉकलेट दिए। शिविर संचालक दीपा आहूजा ने बताया कि यहाँ अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रतिदिन सुबह 7 से 8 बजे तक योगा, खेलकूद और मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे बच्चों को स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है। इसके बाद सुबह 8 से 11 बजे तक चित्रकला, मेहंदी, कंप्यूटर, कुकिंग (लड़के एवं लड़कियों के लिए पृथक), कैलीग्राफी, हस्तलेखन, संगीत, नृत्यकला, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट, सेल्फ़ ब्यूटीशियन और अंग्रेजी स्पोकन की कक्षाएं संचालित की जा रही हैं। सुबह 11 से 12 बजे तक बच्चे पुस्तकालय सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट की कक्षा में बच्चों के क्रिएटिव आइटम्स और कंप्यूटर क्लास में विद्यार्थियों द्वारा तैयार जीके क्विज, गेम डेवलपमेंट, पीपीटी और एक्सेल स्किल्स का प्रदर्शन किया।

ग्रामीणों को हीट स्ट्रोक से बचाव की दी जानकारी

भोपाल। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती गर्मी और लू के खतरे को देखते हुए बकानिया गांव में एम्स भोपाल द्वारा 'बीट द हीट' विषय पर स्वास्थ्य शिविर एवं जनजागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। ग्रामीणों को गर्मी से होने वाली बीमारियों से बचाव और स्वस्थ जीवनशैली के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। कार्यक्रम में डायटेटिक्स विभाग की निधि वैद्य व साची सोनकर ने भूमिका निभाई। विशेषज्ञों ने ग्रामीणों को बताया कि भीषण गर्मी के दौरान पर्याप्त मात्रा में पानी पीना, शरीर में पानी की कमी नहीं होने देना जरूरी है।

'रक्त नालियों में नहीं, नाड़ियों में बहे' के संदेश को किया चरितार्थ

निरंकारियों ने शिविर में 219 यूनिट ब्लड दान किया

संतनगर. दोपहर मेट्रो।

संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में संत निरंकारी सत्संग भवन में एक ल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जोनल इंचार्ज अशोक जुनेजा की देखरेख में हमीदिया ब्लड बैंक ने अपनी सेवाएं दीं। शिविर में कुल 219 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक चले इस शिविर को लेकर रक्तदाताओं में उत्साह देखा गया। प्रातः काल से ही सत्संग भवन में रक्तदान के लिए लंबी-लंबी कतारें

लग गईं, जिसमें युवाओं और महिलाओं ने बढ़-चढ़कर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

जोनल इंचार्ज जुनेजा ने कहा कि बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के प्रेरक कथन रक्त नालियों में नहीं, नाड़ियों में बहे को याद करते हुए कहा कि मिशन के अनुयायी इस संदेश को सदैव अपने जीवन में चरितार्थ करते आए हैं। इस अवसर पर क्षेत्रीय संचालक अखिलेश यादव सहित बड़ी संख्या में सेवादल के भाई-बहन, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी, शहर के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

मेट्रो एंकर

जनजातीय संग्रहालय में लोक संस्कृति की अनुपम छटा

नृत्य, गायन और वादन की दी आकर्षक प्रस्तुतियां

भोपाल. दोपहर मेट्रो।

मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में आयोजित 'संभावना' गतिविधि के अंतर्गत लोक संस्कृति और जनजातीय कला का भव्य संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न अंचलों से आए कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य, लोकगायन और वादन की प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। आयोजन में कोरकू जनजातीय ढांढल नृत्य, बरेदी नृत्य, बुंदेली गायन और बघेली लोकगीतों की प्रस्तुतियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।

रीवा से आई प्रमिला मिश्रा एवं उनके साथियों ने बघेली लोकगीतों की मधुर प्रस्तुतियों से कार्यक्रम की शुरुआत की। 'हमरे अंगना चले आबा हो गउरा के ललनबा' जैसी गणेश वंदना से लेकर 'मोरे अंगना राजा मोरे अंगना' जैसे बधाई गीतों तक कलाकारों ने लोक जीवन की भावनाओं को स्वर दिया। इसके अलावा सोहाग, अंजुरी, गारी और कलेवा जैसे पारंपरिक गीतों ने दर्शकों को लोक संस्कृति की गहराई से परिचित कराया। मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में प्रत्येक रविवार दोपहर 2 बजे आयोजित होने वाली 'संभावना' गतिविधि के माध्यम से प्रदेश की जनजातीय और लोक कला परंपराओं को संरक्षित और प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस मंच पर मध्यप्रदेश के विभिन्न लोकांचलों के साथ देश के अन्य राज्यों की कला विधाओं को भी प्रस्तुत किया जाता है, जिससे आमजन को भारतीय लोक संस्कृति को करीब से जानने और समझने का अवसर मिलता है। बैतूल से आए शांतिलाल कासड़े एवं साथियों ने कोरकू जनजातीय ढांढल नृत्य की प्रस्तुति दी। यह नृत्य विशेष रूप से चैत्र और वैशाख की रातों में किया जाता है। नर्तक हाथों में डंडे लेकर गोल घेरे में तालबद्ध तरीके से नृत्य करते हैं। ढोल, टिमकी, ढोलक और झांझ की धुन पर प्रस्तुत इस नृत्य की तेज गति और सामूहिक तालमेल ने दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस पर 'खजाने की खोज' में उमड़े लोग

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

रचनात्मक, शैक्षणिक और मनोरंजक कार्यक्रमों की रंगारंग श्रृंखला इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर आयोजित की गई। दिनभर चले आयोजनों में युवाओं, विद्यार्थियों, महिलाओं और कला-संस्कृति प्रेमियों ने भाग लिया।

'खजाने की खोज' प्रतियोगिता और 'भोपाल के संग्रहालयों का भ्रमण' कार्यक्रम आकर्षण का केंद्र रहे। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 7:30 बजे आयोजित 'खजाने की खोज प्रतियोगिता से हुई। संग्रहालय परिसर और श्यामला पहाड़ी स्थित विरासत एवं सांस्कृतिक स्थलों से जुड़े संकेतों के आधार पर प्रतिभागियों को खोज अभियान पूरा करना था। प्रतियोगिता में दोपहिया वाहनों पर सवार 65 टीमों के 130 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। संग्रहालय के निदेशक प्रो. डॉ. अमिताभ पांडे ने प्रतिभागियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि संग्रहालय केवल धरोहरों के संरक्षण का केंद्र नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृतियों और ज्ञान परंपराओं के जीवंत स्थल हैं। इसी क्रम में विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एनएचएम के 32 हजार संविदा कर्मचारियों का ऐलान

2 जून से अनिश्चितकालीन हड़ताल; 8 जून को भोपाल में सीएम निवास का घेराव करेंगे

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत कार्यरत करीब 32 हजार संविदा कर्मचारियों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर अब आर-पार की लड़ाई का ऐलान किया है। कर्मचारियों ने चरणबद्ध आंदोलन की घोषणा करते हुए कहा कि यदि समय रहते हमलोगों मांगों पर ठोस निर्णय नहीं लिया गया तो 2 जून से अनिश्चितकालीन हड़ताल शुरू की जाएगी।

कर्मचारियों का कहना है कि वे सालों से स्वास्थ्य सेवाओं के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, लेकिन उनकी समस्याओं की लगातार अनदेखी की जा रही है। पूर्व में सरकार की ओर से मांगों पर सहमति जताई गई थी, लेकिन एक साल बीतने के बाद भी कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। इससे कर्मचारियों में गहरा असंतोष और आक्रोश व्याप्त है।

नियमितीकरण समेत 8 प्रमुख मांगें रखीं

संविदा कर्मचारियों ने अपनी प्रमुख मांगों में नियमितीकरण, एनपीएस और स्वास्थ्य बीमा का लाभ, 10 प्रतिशत वार्षिक वेतन वृद्धि, महंगाई भत्ता, वेतन विसंगतियों का निराकरण, नियमित कर्मचारियों जैसी छुट्टियां और सुविधाएं और समान काम के लिए समान वेतन शामिल किया है। कर्मचारियों का कहना है कि ये सभी मांगें लंबे समय से लंबित हैं। 25 मई से शुरू होगा चरणबद्ध आंदोलन 25 से 27 मई तक कर्मचारी काली पट्टी बांधकर विरोध दर्ज कराएंगे। इसके बाद 28 और 29 मई को कलेक्टर, सीएमएचओ और बीएमओ को ज्ञापन सौंपा जाएगा। 30 मई से 1 जून तक जनप्रतिनिधियों- सांसद, विधायक और मंत्रियों को अपनी समस्याओं से अवगत कराया जाएगा।

2 जून से काम ठप, 8 जून को घेराव यदि इसके बाद भी मांगों का निराकरण नहीं हुआ तो 2 जून से सभी कर्मचारी ऑनलाइन और ऑफलाइन कार्यों का पूर्ण बहिष्कार कर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। आंदोलन के अंतिम चरण में 8 जून को भोपाल पहुंचकर मुख्यमंत्री निवास का घेराव किया जाएगा। स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ सकता है असर कर्मचारियों ने चेतावनी दी है कि हड़ताल की स्थिति में स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं, जिसकी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी। उन्होंने सरकार से अपील की है कि समय रहते मांगों का समाधान कर आम जनता को होने वाली असुविधा से बचाया जाए।

एनएचएम संविदा कर्मचारियों की प्रमुख मांगें

- नियमितीकरण : सभी संविदा कर्मचारियों को स्थायी (नियमित) किया जाए।
- एनएचएम और स्वास्थ्य बीमा का लाभ : सामान्य प्रशासन विभाग की नीति 2023 के अनुसार न्यू पेंशन स्कीम और हेल्थ इंश्योरेंस लागू किया जाए।
- 10 प्रतिशत वार्षिक वेतन वृद्धि : अन्य राज्यों की तरह हर वर्ष 10 प्रतिशत वेतन बढ़ाया जाए।
- महंगाई भत्ता : नियमित कर्मचारियों की तरह महंगाई भत्ता दिया जाए।
- वेतन में सुधार (पीबीआई/इंक्रीमेंट) : सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों सहित अन्य पदों के वेतन में उचित संशोधन और पूर्व की तरह इंक्रीमेंट दिया जाए।
- वेतन विसंगतियों का निराकरण : शासन द्वारा तय वेतन संरचना में जो विसंगतियां हैं, उन्हें सुधारकर संशोधित किया जाए।
- नियमित कर्मचारियों जैसी छुट्टियां : संविदा कर्मचारियों को भी नियमित कर्मचारियों के समान अवकाश का लाभ दिया जाए।
- समान काम के लिए समान वेतन : जब तक समान काम के बदले समान वेतन और सुविधाएं नहीं मिलती, तब तक यह मुद्दा प्राथमिकता से हल किया जाए।

पुरानी वोटर लिस्ट से अध्यक्ष, पार्षद-सरपंच के चुनाव का फैसला

एसआईआर में नाम कटा, फिर भी डाल सकेंगे वोट, केंद्र-राज्य के बीच तकरार

भोपाल, दोपहर मेट्रो

स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) में जिन मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से हटे हैं, वे अगले साल के नगर निगम और पंचायत चुनावों में फिर भी वोट डाल सकते हैं। इसकी वजह भारत निर्वाचन आयोग और राज्य निर्वाचन आयोग के बीच मतदाता सूची को लेकर विवाद है। इससे एक आयोग की तरफ से हटाया गया मतदाता दूसरे आयोग की सूची में शामिल हो सकता है।

विवाद की वजह क्या है?- विवाद मतदाता सूची साझा करने को लेकर है। राज्य निर्वाचन आयोग ने स्ढ्क्र के बाद तैयार नई वोटर लिस्ट मांगी थी, ताकि 15 जिलों के निकाय उपचुनाव और अगले साल के पंचायत व नगरीय चुनाव उसी आधार पर कराए जा सकें।

राज्य आयोग ने पांच बार पत्र भेजे, लेकिन केंद्रीय आयोग ने सूची उपलब्ध नहीं कराई। इसके बाद राज्य निर्वाचन आयोग ने अलग वोटर लिस्ट तैयार करने की प्रक्रिया शुरू की।

एसआईआर के बाद 34 लाख नाम हटने का असर- केंद्रीय चुनाव आयोग ने 21 फरवरी 2026 को अंतिम वोटर लिस्ट जारी की थी। 1 जनवरी 2026 की स्थिति के अनुसार 34 लाख से अधिक नाम हटाए गए। इसके बाद प्रदेश में कुल मतदाता 5.39 करोड़ रह गए। यह प्रक्रिया दावों और आपत्तियों के निपटारे के बाद पूरी हुई।

पांच पत्रों के बाद भी सूची नहीं मिली- नियमों के अनुसार केंद्रीय आयोग को 60 दिनों के भीतर विधानसभावार मतदाता सूची उपलब्ध करानी होती है। राज्य निर्वाचन आयोग ने 28 जनवरी से 22 अप्रैल तक पांच बार पत्र और रिमाइंडर भेजे। सूची नहीं मिलने पर 23 अप्रैल को राज्य आयोग ने जिला स्तर पर अलग वोटर लिस्ट तैयार करने के निर्देश जारी किए।

सूची न देने का फैसला केंद्रीय आयोग का- संयुक्त मुख्य राज्य निर्वाचन पदाधिकारी आरपी सिंह जादौन ने कहा कि राज्य निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची के पुनरीक्षण के लिए सूची मांगी थी। भारत निर्वाचन आयोग का जवाब था कि वह रिवीजन प्रक्रिया के लिए वोटर लिस्ट उपलब्ध नहीं कराता। उन्होंने कहा कि सूची न देने का फैसला केंद्रीय आयोग का ही है।

समन्वय की कमी से दो संभावित समस्याएं

राज्य निर्वाचन आयोग सामान्यतः विधानसभा मतदाता सूची के आधार पर वार्डवार सूची तैयार करता है, लेकिन इस बार समन्वय की कमी से व्यावहारिक समस्याएं सामने आ सकती हैं। पहली स्थिति यह हो सकती है कि स्ढ्क्रमें हटाए गए 34 लाख मतदाता राज्य निर्वाचन आयोग की प्रक्रिया में दोबारा दस्तावेज देकर स्थानीय निकाय चुनावों की सूची में शामिल हो जाएं। दूसरी स्थिति में वे मतदाता प्रभावित हो सकते हैं जिन्होंने स्ढ्क्रके दौरान अपना नाम जुड़वाया था। स्थानीय चुनावों में शामिल होने के लिए उन्हें फिर से दस्तावेज जमा करने पड़ सकते हैं।

एक्सपर्ट बोले- इंटीग्रेटेड इलेक्शन सिस्टम होना चाहिए

रिटायर्ड अधिकारी आरआर बंसल ने कहा कि परंपरागत रूप से राज्य निर्वाचन आयोग, चुनाव आयोग से मतदाता सूची लेकर उसे अपडेट करता है। उनके मुताबिक स्ढ्क्रके बाद आई विसंगतियों की आशंका के कारण सूची साझा नहीं की गई होगी। उन्होंने कहा कि स्थानीय निकाय और विधानसभा चुनावों में मतदाता अलग-अलग पते दर्ज करा सकते हैं। वहीं पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ओपी रावत ने बताया कि केंद्रीय चुनाव आयोग साल में चार बार मतदाता सूची अपडेट करता है, जबकि राज्य निर्वाचन आयोग साल में एक बार सूची संशोधित करता है।

सीजेआई सूर्यकांत भी कर चुके हैं पहल की सराहाना

मप्र में पेपर लैस कार्य संस्कृति को किया जा रहा है प्रोत्साहित

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर प्रदेश में पेपरलेस कार्य संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। नागरिकों को एमपी ई-सेवा पोर्टल एवं मोबाइल ऐप पर सरकार के 56 विभागों की 1700 सेवाएं एक ही पोर्टल पर उपलब्ध हैं। प्रदेश में साइबर तहसीलों की स्थापना हो चुकी है। इस नवाचार को प्रधानमंत्री पुरस्कार भी मिल चुका है। भोपाल में देश के पहले साइबर पंजीयन कार्यालय की शुरुआत की गई है। प्रदेश में ई-जीरो एफआईआर का भी शुभारंभ किया गया है। मंत्रि-परिषद की कार्यवाही पूर्णतः पेपरलैस हो चुकी है, जिससे न केवल समय की बचत हुई है, बल्कि प्रशासनिक पारदर्शिता भी बढ़ी है। प्रदेश में सुशासन के साथ ग्रीन गवर्नेंस को भी बढ़ावा मिल रहा है। इन नवाचारों से प्रदेश में जनकल्याणकारी योजनाओं और जन सामान्य से जुड़ी सेवाओं तक आम आदमी की पहुंच को आसान और उनके उपयोग को सरल व सुगम बनाया जा रहा है। सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधीश-न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने जबलपुर के एक कार्यक्रम में प्रदेश में पेपर लैस कार्य प्रणाली को प्रोत्साहित करने के लिए संचालित गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश, पूर्णतःपेपरलैस बनने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। इससे पर्यावरण को भी संबल मिलेगा।

तकनीक के बदलते दौर में बदल रहा न्यायिक प्रशासन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि पारदर्शिता और जवाबदेही, सुशासन के दो मजबूत स्तंभ हैं और एक -दूसरे के पूरक भी। पारदर्शिता से जवाबदेही मजबूत होती है और जवाबदेही स्वयं पारदर्शिता की कारक होती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में डिजिटल क्रांति ने देश में सर्विस डिलीवरी और व्यवस्था की जवाबदेही को मजबूती दी है। तकनीक आज सामाजिक परिवर्तन के साथ व्यवस्था में बदलाव का भी प्रमुख कारक बन गई है। तकनीक के इस बदलते दौर में प्रदेश के न्यायालय तेजी से बदल रहे हैं। वर्षों तक न्यायिक प्रक्रिया कागजी अभिलेखों पर आधारित रही। एफआईआर से लेकर चार्जशीट, केस डायरी, मेडिकल रिपोर्ट, फॉरेंसिक रिपोर्ट, समन, वारंट और अंतिम निर्णय हर चरण पर भौतिक दस्तावेजों का आदान-प्रदान होता था। अब डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के माध्यम से हम एंड-टू-एंड ई-प्रोसीडिंग की ओर बढ़ रहे हैं। ई-फाइलिंग, ई-समन, डिजिटल केस मैनेजमेंट सिस्टम (सीएमएस) और इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट मैनेजमेंट सिस्टम जैसी व्यवस्थाएं न्यायिक प्रशासन को अधिक कुशल बना रही हैं।

गुड गवर्नेंस के नए आयाम होंगे स्थापित

प्रधानमंत्री मोदी के सुशासन के मंत्र को आत्मसात करते हुए मिनिमम गवर्नमेंट- मैग्सिमम गवर्नेंस के मूल मंत्र के साथ मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश में गुड गवर्नेंस के नए आयाम स्थापित करने की दिशा में सक्रिय हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से कार्यालयों में फाइलों की मॉनिटरिंग, समयबद्ध निराकरण और उत्तरदायित्व सुनिश्चित हुआ है। इससे भ्रष्टाचार में कमी, पारदर्शिता में वृद्धि तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं में गति आई है। लोक सेवा केंद्रों के माध्यम से नागरिकों को समयबद्ध सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। सीएम हेल्पलाइन नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित कर रही है। संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर सिस्टम के माध्यम से प्रदेश में रजिस्ट्री की सुविधा अब लोगों के लिए आसान हुई है। नागरिक अब घर बैठे दस्तावेज के पंजीयन करवा रहे हैं। वारंट और समन की तामील के लिए ई-तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

इलाज के लिए नहीं भागना पड़ेगा बड़े शहर

मप्र के जिला अस्पतालों को मिलेंगे 119 विशेषज्ञ डॉक्टर

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मध्य प्रदेश के दूर दराज के क्षेत्रों और जिला अस्पतालों में विशेषज्ञ डाक्टरों की कमी अब जल्द ही दूर होने जा रही है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) ने प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने और मरीजों को स्थानीय स्तर पर बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के लिए अपनी भर्ती प्रक्रिया तेज कर दी है। इसी कड़ी में प्रदेश के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों में रिक्त कुल 119 पदों पर विशेषज्ञ डाक्टरों और चिकित्सा अधिकारियों की नियुक्ति की जा रही है। इन नियुक्तियों के बाद जिला स्तर पर मरीजों को बड़े शहरों की ओर नहीं भागना पड़ेगा।

सर्वाधिक 44 पद भरे जाएंगे

जिला अस्पतालों में आपरेशन और गंभीर उपचार के लिए सबसे अधिक आवश्यकता निश्चेतना विशेषज्ञों की होती है। वर्तमान में इनकी कमी के कारण कई जगह आपरेशन टालने पड़ते हैं, जिसे देखते हुए मिशन द्वारा सर्वाधिक 44 पद भरे जा रहे हैं। कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में विशेषज्ञों को तैनात करने के लिए विभाग %यू कोट वी पे% जैसी योजना का सहारा ले रहा है, ताकि योग्य डाक्टर खुद अपनी पसंद का मानदेय प्रस्तावित कर सकें।

छोटे जिलों के 25 केंद्रों में रेडियालाजिस्ट की तैनाती

इसके अलावा ग्वालियर, जबलपुर, रीवा और सागर सहित कई छोटे जिलों के 25 केंद्रों पर रेडियोलॉजिस्ट की तैनाती की जा रही है। इससे अस्पतालों में एक्स-रे, सीटी स्कैन और सोनोग्राफी जैसी जांच सेवाओं में व्यापक सुधार होगा। साथ ही शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से 23 शिशु रोग विशेषज्ञों और 11 स्त्री रोग विशेषज्ञों का चयन किया जा रहा है। शहरी स्वास्थ्य ढांचे को मजबूती देने के लिए दतिया, कटनी और रायसेन जैसे जिलों के संजीवनी क्लीनिकों के लिए 20 मेडिकल ऑफिसर नियुक्त किए जा रहे हैं। वहीं, आगर मालवा और अलीराजपुर जैसे जिलों में ब्लड बैंक सेवाओं के लिए छह विशेषज्ञ तैनात होंगे।

विशेषज्ञ डाक्टरों की कमी को दूर करने के लिए पारदर्शी तरीके से चयन प्रक्रिया अपनाई जा रही है। विशेषकर निश्चेतना और रेडियोलाजी जैसे क्षेत्रों में डाक्टरों की नियुक्ति से जिला अस्पतालों की कार्यक्षमता बढ़ेगी। यू कोट वी पे के माध्यम से हम दूरस्थ जिलों में भी विशेषज्ञों की सेवाएं सुनिश्चित कर रहे हैं।
– दिशा प्रणय नागवंशी, अपर मिशन संचालक, एनएचएम

मध्यप्रदेश पुलिस की अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही

भोपाल। मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा प्रदेशभर में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में विगत दो दिनों में मंदसौर, उमरिया, कटनी, मैहर एवं सागर जिलों की पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में अवैध डोडाचूरा एवं गांजा जप्त किया है। साथ ही तस्करी में प्रयुक्त वाहन भी जप्त किए गए हैं। जिले की चौकी अमरपुर पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त वाहन की तलाशी के दौरान 62 किलो 384 ग्राम अवैध गांजा जब्त किया। वाहन चालक एवं अन्य आरोपी मौके से फरार हो गए, जिनकी तलाश जारी है। पुलिस द्वारा गांजा एवं वाहन सहित लगभग 22 लाख 50 हजार रुपये की संपत्ति जब्त की है।

दिल दहला देने वाला जबलपुर बरगी क्रूज हादसा

न्यायिक जांच आयोग के गठन को बीते 8 दिन, पर अब तक न दफ्तर मिला, न स्टाफ और न सेवा-शर्तें

जबलपुर, दोपहर मेट्रो

एक पखवाड़े से अधिक समय बीतने के बावजूद दिल दहला देने वाले बरगी डेम क्रूज हादसे की उच्च स्तरीय जांच के लिए गठित न्यायिक आयोग की सेवा-शर्त नदारद है। एकल जांच आयोग के अध्यक्ष हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति संजय द्विवेदी को तीन माह की नियत समय-सीमा के भीतर अपनी जांच रिपोर्ट सरकार को सौंपनी है। लेकिन आलम यह है कि अभी तक आयोग हरकत में नहीं आ पाया है। आयोग के कार्यालय, संसाधन व कार्मिक व्यवस्था आदि का अता-पता नहीं है। उल्लेखनीय है कि मप्र शासन, सामान्य प्रशासन विभाग ने हादसे के दसवें दिन 10 मई को एकल जांच आयोग गठन की अधिसूचना जारी की थी। राज्यपाल के आदेशानुसार अपर सचिव दिनेश कुमार मौर्य के हस्ताक्षर से जारी अधिसूचना में कहा गया था कि जबलपुर के बरगी बांध में क्रूज दुर्घटना के कारण जनहानि की दुर्भाग्यपूर्ण घटना की न्यायिक जांच हेतु राज्य शासन जांच आयोग अधिनियम, 1952 (1952 का 60) की धारा-तीन द्वारा प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए, हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री संजय द्विवेदी की अध्यक्षता में एकल सदस्य जांच आयोग, नियुक्त करता है।

जांच के बिन्दु इस प्रकार होंगे

- दुर्घटना के कारणों की जांच करना व उत्तरदायित्व का निर्धारण।
- दुर्घटना के दौरान व दुर्घटना के उपरांत बचाव उपायों की पर्याप्तता एवं राहत कार्यों की समीक्षा।
- राज्य में संचालित सभी नौकाओं, क्रूज व जल क्रीडा गतिविधियों का ऑडिट व इनलैंड वेसल्स एक्ट, 2021 व एनडीएमए बोट सेफ्टी गाइडलांइस-2017 के अनुरूप जलयानों के प्रमाणीकरण की व्यवस्था।
- राज्य में क्रूज, नौकाओं एवं जल क्रीडा गतिविधियों के संचालन व रखरखाव हेतु एक समान मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करना।
- ऐसे सभी स्थानों पर, जहां नागरिक जल परिवहन, नौका, क्रूज व जल क्रीडा गतिविधियां संचालित की जा रही है, त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्विक रिस्पांस टीम) के गठन की व्यवस्था।

दोपहर मेट्रो

प्रदेश का गौरव-किंग ऑफ मैंगो नूरजहाँ आम

मप्र के आमों की मिठास और विशालकाय नूरजहां की विश्व पहचान

भोपाल, दोपहर मेट्रो

भारत को आमों का देश कहा जाता है और मध्यप्रदेश इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाला प्रमुख राज्य बनकर उभरा है। प्रदेश की जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और विविध भौगोलिक परिस्थितियां आम उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती हैं। यही कारण है कि यहां दशहरी, लंगड़ा, चौसा, केसर, आम्रपाली, अल्फांसो और तोतापरी जैसी अनेक प्रसिद्ध किस्मों के साथ-साथ एक ऐसी अनोखी किस्म भी पैदा होती है, जिसने देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी विशेष पहचान बनाई है। यह विशेष किस्म है नूरजहाँ आम। इसे किंग ऑफ मैंगो भी कहा जाता है।

मध्यप्रदेश के जनजातीय बहुल आलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में पैदा होने वाला नूरजहाँ आम अपने विशाल आकार, अद्वितीय स्वाद और आकर्षक स्वरूप के लिए प्रसिद्ध है। इसे दुनिया के सबसे बड़े आमों में गिना जाता है। सामान्यतः एक नूरजहाँ आम का वजन लगभग 2 से 5 किलोग्राम तक होता है। इसका आकार इतना बड़ा होता है कि एक ही आम पूरे परिवार के लिए पर्याप्त माना जाता है। इसका रंग, सुगंध और मिठास लोगों को पहली नजर में आकर्षित कर लेते हैं। बाजार में इसकी मांग विशेष रूप से बड़े शहरों और विदेशों में अधिक है। एक आम की कीमत 1500 से 3000 तक होती है।

नूरजहाँ आम केवल अपने आकार के कारण ही नहीं, बल्कि अपनी दुर्लभता के कारण भी विशेष माना जाता है। इसके पेड़ों पर सीमित संख्या में फल आते हैं, इसलिए इसकी कीमत सामान्य आमों की तुलना में कई गुना अधिक होती है। कई बार एक फल ही हजारों रुपये में बिक जाता है। यही कारण है कि यह आम किसानों के लिए लाभकारी फसल के रूप में उभर रहा है। कट्ठीवाड़ा का मौसम और वातावरण इस किस्म के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है, जिससे यहां पैदा होने वाले फल विशेष गुणवत्ता वाले होते हैं।

अफगान से भारत से पहुंची प्रजाति

माना जाता है कि नूरजहाँ आम की यह प्रजाति वर्षों पहले अफगान क्षेत्र से भारत पहुंची और बाद में पाँचवें - छठवें दशक में मध्यप्रदेश के मालवा तथा आदिवासी अंचल झाबुआ में विकसित हुई। आलीराजपुर जिले के ग्राम जूना कट्ठीवाड़ा स्थित शिव (बावड़ी) आम फार्म के कृषक श्री भरतराजसिंह जादव बताते हैं कि उनके पिता स्व. रणवीरसिंह जादव लगभग 55 से 60 वर्ष पूर्व गुजरात के बनमाह क्षेत्र से नूरजहाँ आम का पौधा लेकर आए थे। उन्होंने अपने खेत में इस पौधे को लगाया और वर्षों की मेहनत से इसे संरक्षित किया।

नूरजहां आम की ख्याति वर्षों पुरानी

आज यह मध्यप्रदेश की विशेष पहचान बन चुकी है। कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में नूरजहाँ आम की ख्याति वर्षों पुरानी है। इसकी विशिष्टता को देखते हुए वर्ष 1999 तथा 2010 में इसे राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों ने न केवल किसानों का उत्साह बढ़ाया बल्कि आलीराजपुर जिले को भी राष्ट्रीय पहचान दिलाई। धीरे-धीरे यह आम मध्यप्रदेश की उद्यानिकी पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया। नूरजहाँ आम का इतिहास मालवा और पश्चिमी भारत की सांस्कृतिक विरासत से भी जुड़ा माना जाता है। कहा जाता है कि मुगलकाल में बड़े आकार और विशेष स्वाद वाले आमों को शाही बागों में विशेष महत्व दिया जाता था। इसी परंपरा से जुड़ी यह किस्म समय के साथ गुजरात और झाबुआ-आलीराजपुर अंचल तक पहुंची।

वैश्विक शक्ति-संतुलन

विश्व राजनीति में अक्सर युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं लड़े जाते, कई बार वे मुस्कुराहटों, हाथ मिलाने और साझा घोषणाओं के भीतर छिपे होते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की हालिया मुलाकात भी ऐसी ही कूटनीतिक तस्वीर पेश करती है, जिसमें शब्द शांति के हैं, लेकिन संकेत बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन के हैं। यह बैठक केवल अमेरिका और चीन के रिश्तों की कहानी नहीं कहती, बल्कि उन देशों के लिए भी चेतावनी है, जिन्होंने महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा के बीच अपने लिए अवसर तलाशे थे। भारत उनमें सबसे प्रमुख है। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया ने देखा कि वाशिंगटन और बीजिंग के बीच बढ़ती दूरी ने नई दिल्ली की अहमियत को असाधारण रूप से बढ़ा दिया। अमेरिका को एशिया में ऐसा साझेदार चाहिए था जो चीन की बढ़ती ताकत का संतुलन बन सके। इसी दौर में भारत को रक्षा सहयोग, तकनीकी निवेश, सेमीकंडक्टर निर्माण और वैश्विक सप्लाई चेन में नई जगह मिली। दुनिया की बड़ी कंपनियां चीन पर निर्भरता कम करने लगीं और भारत को विकल्प के रूप में देखने लगीं। लेकिन अब परिस्थितियां बदलती दिख रही हैं। ट्रंप और शी के बीच हुई बातचीत में व्यापारिक रिश्तों को फिर से मजबूत करने की झलक साफ दिखाई दी। चीन यदि अमेरिकी बाजार और तकनीक के लिए फिर से सहज साझेदार बनने लगता है, तो उसका सीधा असर उन देशों पर पड़ेगा, जो इस प्रतिस्पर्धा के कारण लाभ की स्थिति में आए थे। भारत के लिए यह केवल आर्थिक चुनौती नहीं होगी, बल्कि रणनीतिक दबाव भी पैदा करेगा। ताइवान को लेकर चीन की सख्त भाषा और उस पर अमेरिका की अपेक्षाकृत नरम प्रतिक्रिया ने भी कई सवाल खड़े किए हैं। इससे यह संदेश गया है कि अमेरिका अब टकराव की राजनीति से कुछ दूरी बनाना चाहता है। यही वह समय है जब भारत को भावनात्मक कूटनीति के बजाय व्यावहारिक रणनीति अपनानी होगी। विश्व राजनीति में कोई स्थायी मित्र नहीं होता, केवल स्थायी हित होते हैं। महाशक्तियां अपने आर्थिक और सामरिक लाभ के अनुसार रिश्तों की दिशा बदलती रहती हैं। इसलिए भारत को अपनी ताकत बाहरी समीकरणों पर नहीं, बल्कि घरेलू आर्थिक क्षमता, तकनीकी आत्मनिर्भरता और मजबूत क्षेत्रीय प्रभाव पर टिकानी होगी। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सबसे बड़ा संकट वही देश झेलते हैं, जो दूसरों की प्रतिस्पर्धा को अपनी स्थायी सुरक्षा मान बैठते है।

राहुल के विदेशी नेटवर्क से जुड़े भारत विरोधी ताकतों के सवाल

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

राहुल गांधी की विदेश यात्राओं के खर्च का विवाद भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के बीच चल रहा एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा है। बीजेपी का आरोप है कि राहुल गांधी ने पिछले 22 वर्षों में 54 विदेश यात्राएं की है। इन यात्राओं पर अनुमानित खर्च लगभग 60 करोड़ रुपये आया है, जबकि उनकी घोषित आय केवल 11 करोड़ रुपये के आसपास है। कांग्रेस पार्टी इसे गैर महत्वपूर्ण कहकर कोई विस्तृत सफाई नहीं दे रही। सवाल केवल यात्राओं और खर्च का नहीं , विदेशों के मेजबान लोगों , संगठनों और फिर वहां भारत के लोकतंत्र को लेकर दिए बयानों , गतिविधियों , गुप्त यात्राओं के महत्वपूर्ण हैं। शायद राहुल गांधी और कांग्रेस के उनके करीबी नेताओं को उनके सत्ता काल में ही ऐसी विदेश यात्राओं से आए राजनीतिक संकट का ध्यान नहीं है। सबसे बड़ा संकट 1985 में राजीव गांधी के प्रधान मंत्री और पार्टी प्रमुख रहते आया था , जब कांग्रेस के नेताओं की विदेश यात्राओं के तार जासूसी के प्रकरण सेक्क्जुड़े और मंत्रियों के इस्तीफे करवाने पड़े।

मेरे जैसे पत्रकार उन तथ्यों की ओर ध्यान दिला सकते हैं। असल में मैंने नव भारत टाइम्स के विशेष संवाददाता के रूप में 1985 में सी आई ए से जुड़े एक जासूसी कांड पर चल रही जांच पर एक एक्सक्लूसिव रिपोर्ट लिखी थी। 10 अक्टूबर 1985 को प्रकाशित इस रिपोर्ट में मैंने बताया था कि ' सरकारी एजेंसियां एक विवादास्पद व्यापारी राम स्वरुप और उससे जुड़े लोगों के संबंधों और सी आई ए के लिए जासूसी के प्रकरण की जांच कर रही है और इससे राजीव गांधी सरकार के मंत्रियों के नाम भी होने से कांग्रेस तथा पी एम् के लिए राजनीतिक संकट पैदा हो सकता है। ' खबर पर हंगामा और राम स्वरुप की तरफ से मानहानि का क़ानूनी नोटिस आना स्वाभाविक था। लेकिन नोटिस के जवाब के बजाय मैंने कुछ फॉलो अप ख़बरें करके जासूसी से जुड़े और तथ्यों को छाप दिया।

असल में राम स्वरूप जासूसी प्रकरण 1985-86 के भारत के सबसे रहस्यमय और राजनीतिक रूप से विस्फोटक मामलों में गिना जाता है। इसमें खुफिया एजेंसियों, विदेशी लॉबिंग, राजनीति का मिश्रण दिखाई दे रहा था।1985 की शुरुआत में भारत में एक अन्य बड़े जासूसी नेटवर्क – कुमार नारायण जासूसी काण्ड का खुलासा हुआ। इसमें प्रधानमंत्री कार्यालय, रक्षा मंत्रालय और अन्य विभागों से दस्तावेज लीक होने के आरोप लगे। तब गुप्तचर एजेंसियां और दिल्ली पुलिस ने गहरी जांच पड़ताल शुरू की। इसी व्यापक निगरानी के दौरान राम स्वरूप नेटवर्क पर भी ध्यान गया। सितम्बर में रामस्वरूप के घर , दफ्तर और कुछ अन्य ठिकानों पर छापे मारे गए। सरकारी सूत्रों के अनुसार वहाँ से विदेशी मुद्रा, राजनीतिक दस्तावेज, संसद चर्चाओं के नोट्स, रक्षा और विदेश नीति से जुड़ी फाइलें, तथा विदेशी संपर्कों के रिकॉर्ड मिले। हमने प्रमुख तथ्य प्रकाशित कर दिए। तब एक दो अन्य अख़बारों में भी उनका उल्लेख हुआ।

जांच एजेंसियों ने बताया कि राम स्वरूप विदेशी एजेंसियों के लिए सूचनाएं इकट्ठा करता है।भारत की विदेश और रक्षा नीति पर सूचनाएँ इकट्ठी की गई तथा प्रभावशाली नेताओं/अधिकारियों को प्रलोभनों से जोड़ रहा है। इसलिए उसके फोन की निगरानी, विदेशी संपर्कों , दूतावासों से संपर्कों और उसके तथा उससे जुड़े लोगों की विदेश यात्राओं के विवरण इकठ्ठे किए गए। इसमें ताइवान , इसराइल जैसे देशों के रास्ते सी आई ए के लिए भारत सम्बन्धी जानकारियां पहुँचाने की बातें सामने आने लगी। 29 अक्टूबर 1985 को उसे गिरफ्तार कर लिया गया। दिल्ली हाई कोर्ट में उसने बचाव में कहा कि वे केवल व्यापार प्रोत्साहन का काम करता था । सरकार ने उस पर आरोप लगाया कि वह कुछ देशों के लिए संवेदनशील जानकारी जुटाता रहा था। उसके पास ऐसे दस्तावेज मिले जो राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े थे । विदेशी संपर्कों को संवेदनशील सुरक्षा संबधी जानकारियां भेजी जा रही थी। मामले की संवेदनशीलता देखते हुए कोर्ट की कुछ कार्यवाही इन कैमरा यानी सार्वजनिक रूप से नहीं हुई। एजेंसियों के वकील ने आरोपपत्र दाखिल किया कि कुछ नेताओं और अधिकारियों ने राम स्वरूप से सुविधाएँ लीं, ताइवान तथा कुछ देशों की राम स्वरुप द्वारा प्रायोजित यात्राएं की। राम स्वरुप ने राजनीतिक प्रभावशाली नेटवर्क बनाया । इस मामले के गंभीर रुप लेने पर जैसा हमने लिखा था , राजनीतिक संकट हो गया। तब टी वी निजी न्यूज़ चैनल सोशल मीडिया नहीं था। दूसरी तरफ राजीव गाँधी सरकार अमेरिका से रिश्ते सुधार रही थी। पार्टी में सोवियत समर्थक लॉबी मजबूत थी। इसलिए 29 जनवरी 1986 को मंत्रिमंडल के दो सदस्यों चंदूलाल चंद्राकर और के पी सिंह देव के मंत्री पद से इस्तीफे ले लिए गए। एक अन्य नेता एम् एस संजीव राव के इलेक्ट्रॉनिक कमीशन के अध्यक्ष पद (कैबिनेट स्तर का) से इस्तीफा हुआ। इन सबके रामस्वरूप के लिए विदेश यात्राओं के प्रमाण मिले थे। उन पर सीधे जासूसी का औपचारिक आपराधिक आरोप सिद्ध नहीं हुआ लेकिन राजनीतिक दबाव और विवाद के कारण इस्तीफा लिया गया। भारत से अधिक अमेरिका में इस इन इस्तीफों को जासूसी कांड से जोड़कर प्रकाशित किया गया। चंद्राकर पहले हिंदी अख़बार के संपादक भी रहे थे। इस जासूसी कांड में दो तीन अन्य पत्रकारों के नाम भी आए। उनसे लम्बी पूछताछ हुई। एक तो बाद में अमेरिका जाकर बस गया। बाद में

सरकार ने प्रकरण को धीरे धीरे ठन्डे बस्ते में डाल दिया।

इस तरह की पृष्ठभूमि में भाजपा का यह सवाल महत्वपूर्ण हो जाता है कि जब राहुल गाँधी की कुल संपत्ति और देनदारियां लगभग 21 करोड़ रुपये हैं, तो इन विदेश यात्राओं पर खर्च हुए 60 करोड़ रुपये का हिसाब कैसे बैठता है?' यह कानूनी सवाल पैदा करता है। विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) के प्रावधानों के तहत, किसी भी सांसद, न्यायाधीश या सरकारी अधिकारी को किसी भी एजेंसी द्वारा प्रायोजित यात्रा के लिए गृह मंत्रालय से पूर्व अनुमति लेनी होती है। यदि कोई व्यक्ति अपने व्यक्तिगत खर्च पर विदेश यात्रा करता है, तो उसे इसका विवरण आयकर रिटर्न में देना होता है। यदि विदेश में आपको कोई उपहार मिलता है या आप पर अज्ञात तरीके से पैसा खर्च किया जाता है, तो यह 'काला धन अधिनियम 2015% के प्रावधानों के दायरे में आता है।' अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, जर्मनी की यात्राओं से अधिक आश्चर्य राहुल की कोलंबिया, विएतनाम, थाईलैंड, क़तर, ओमान, मलेशिया की गुपचुप यात्राओं पर होता रहा है। भाजपा ने सवाल किया, 'क्या उन्होंने अपनी विदेश यात्राओं के लिए गृह मंत्रालय से अनिवार्य पूर्व अनुमति प्राप्त की थी? दस्तावेज़ कहां हैं? क्या उन्होंने आयकर रिटर्न में इसका खुलासा किया है?' यही नहीं पिछले साल सितंबर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पत्र लिखकर दिसंबर 2024 से सितंबर 2025 के बीच राहुल गांधी की छह 'अघोषित विदेश यात्राओं' पर चिंता जताई थी। अभी तीन मई 2026 की रात गांधी की मस्कट (ओमान) की निजी यात्रा का एक वीडियो फुटेज सामने आया । उन्होंने किसी सार्वजनिक कार्यक्रम की घोषणा नहीं की थी। न तो मेजबान का खुलासा किया गया और न ही कोई यात्रा कार्यक्रम बताया गया। उन्हें किसने आमंत्रित किया था? इसके लिए एफसीआरए की धारा छह के तहत अनिवार्य अनुमति भी नहीं दिखाई गई है।'यदि ओमान से जुड़ी इस जानकारी की पुष्टि हो जाती है, तो यह 'येलो बुक' सुरक्षा प्रोटोकॉल (नियमों) के उल्लंघन और अघोषित विदेश यात्राओं के उस क्रम में सातवीं यात्रा होगी।' गांधी द्वारा की जा रही ये विदेश यात्राएं और विशेष रूप से उनकी 'रहस्यमयी यात्राएं' गंभीर सवाल खड़े करती हैं, खासकर तब जब वह भविष्य में देश का प्रधानमंत्री बनने की आकांक्षा रखते हैं।

बताया जाता है कि राहुल गांधी की अमेरिका और ब्रिटेन की विदेश यात्राओं का आयोजन मुख्य रूप से प्रवासी भारतीयों के संगठन 'इंडियन ओवरसीज कांग्रेस' द्वारा किया जाता है , जिसके प्रमुख सैम पित्रोदा हैं और उन्हें गाँधी परिवार का सबसे करीबी माना जाता है। लेकिन राहुल गांधी की विदेश यात्राओं, विशेष रूप से अमेरिका में कुछ विवादित मुस्लिम संगठनों और हस्तियों की भागीदारी, और 'भारत विरोधी' बयानों को लेकर विवाद उठते रहे हैं। राहुल गांधी के 2023 के अमेरिकी दौरे के दौरान, कुछ आयोजनों का समन्वय और समन्वय में सक्रियता भारतीय मूल के और कुछ मुस्लिम समूहों के साथ जुड़े लोगों ने की थी। इनमें 'इंडियन अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल' , 'इस्लामिक सर्किल ऑफ नॉर्थ अमेरिका' , और 'मुस्लिम कम्युनिटी ऑफ न्यू जर्सी' जैसे संगठन शामिल हैं। भारतीय जनता पार्टी का आरोप रहा है कि इन संगठनों के तार पाकिस्तान-समर्थक समूहों और 'जमात-ए-इस्लामी' से जुड़े हुए हैं ।

अपने अमेरिका दौरे के दौरान, राहुल गांधी द्वारा केरल के क्षेत्रीय दल 'इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग' को एक धर्मनिरपेक्ष पार्टी कहे जाने पर भी भारत में भारी राजनीतिक विवाद छिड़ गया था7 दूसरी तरफ ब्रिटेन में 'कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी' और 'चैथम हाउस' में अपने संबोधन के दौरान, राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तुलना मिस्र के कट्टरपंथी संगठन 'मुस्लिम ब्रदरहुड' से की थी। अमेरिका दौरे के दौरान राहुल गांधी की अमेरिकी सांसद 'इलहान उमर' के साथ हुई मुलाकात पर भी तीखा विरोध दर्ज हुआ था। आरोप लगाया गया कि राहुल गांधी विदेशी धरती पर जाकर देश की छवि खराब करते हैं, आंतरिक मामलों को उठाते हैं और ऐसे लोगों व संगठनों से मिलते हैं जो भारत के हितों के खिलाफ काम करते हैं। भारत जोड़ो यात्रा के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी ब्रिटेन के दौरे पहुंचे । एक बयान में राहुल गांधी ने आरएसएस को एक 'फांसीवादी' संगठन बता दिया जिसने भारत के लगभग सभी संस्थानों पर कब्जा कर लिया है। यही नहीं कांग्रेस नेता ने लंदन में आरएसएस की तुलना मिस्र के विवादित संगठन मुस्लिम ब्रदरहुड से कर दी। मुस्लिम ब्रदरहुड एक ऐसा संगठन है जिसे कई देशों में आतंकी गतिविधियों में लिप्त संगठन माना जाता है।मुस्लिम ब्रदरहुड की विवादित नीतियों के कारण इसे सऊदी अरब, यूएई और कई अन्य मुस्लिम देशों में प्रतिबंधित कर दिया गया है।

राहुल गांधी ने भारत में मुस्लिमों की स्थिति को लेकर अमेरिका में बयान दिया । राहुल गांधी ने कहा कि अभी भारत में मुसलमानों की जो स्थिति हैं, वह ठीक वैसे ही है जैसे 80 के दशक में यूपी में दलितों की थी। ' एक सवाल के जवाब में कांग्रेस के राहुल गांधी ने कहा कि जिस तरह आप (मुसलमानों) पर हमला हो रहा है, मैं गारंटी दे सकता हूं कि सिख, ईसाई, दलित, आदिवासी भी ऐसा ही महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज मुस्लिमों के साथ जो हो रहा है वह वैसा ही है जैसा यूपी में 1980 के दशक में दलितों के साथ हुआ। खास बात है कि राहुल जिस 80 के दशक का जिक्र कर रहे थे उस दौरान यूपी में लगभग 8 साल कांग्रेस की ही सरकार थी। ऐसे में राहुल ने यूपी का उदाहरण देकर कांग्रेस को ही फंसा दिया।

राहुल गांधी विदेश में कहते हैं कि वास्तव में आज जो भी भारत में गरीब तबका है, जब देश में चुनिंदा अमीर लोगों को देखता है तो उसे भी बिल्कुल वैसा ही महसूस होता है जैसा आपको होता है। वह भी सोचता है कि आखिर ये क्या हो रहा है। कैसे 4-5 लोगों को पास लाखों-करोड़ों रुपये की संपत्ति है और मेरे पास खाने को कुछ भी नहीं है। राहुल गांधी ने कहा कि चंद लोग हैं जिनका सिस्टम पर कंट्रोल है। उनका मीडिया पर कंट्रोल है। उन लोगों की पीछे पैसे वालों लोगों का पूरा सपोर्ट है। इस तरह राहुल गांधी अक्सर अपनी विदेश यात्राओं और घरेलू रैलियों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, अडानी और अंबानी का नाम लेकर सरकार पर 'क्रोनी कैपिटलिज्म' (मित्र-पूंजीवाद) और 'तानाशाही' के आरोप लगाते हैं।उनका दावा है कि सत्ता और पूंजी का एक ऐसा गठजोड़ बन गया है, जो देश के लोकतांत्रिक संस्थानों को नियंत्रित कर रहा है और आम जनता के हितों की अनदेखी कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी इन आरोपों को सिरे से खारिज करती है। बीजेपी का पलटवार रहता है कि राहुल गांधी के आरोप निराधार हैं और वे अपनी राजनीति चमकाने व भारत की छवि खराब करने के लिए ऐसे बयान देते हैं। मतलब विदेशी नेटवर्क को लेकर राहुल गांधी लगातार विवादों में बने रहते हैं।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

वर्तमान हालात में प्रधानमंत्री के अनुरोध और संदेश के गहरे निहितार्थ समझने की जरूरत

सियाराम पांडेय 'शांत'
स्तंभकार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका-ईरान युद्ध के मद्देनजर कुछ बड़े और कड़े फैसले लिए हैं। उन्होंने देशवासियों से आग्रह किया है कि वे वाहनों के लिए जरूरत के अनुरूप डीजल-पेट्रोल का सीमित उपयोग करें और कम-से-कम एक साल तक सोना न खरीदें। सार्वजनिक वाहनों से यात्रा करें। मेट्रो और रोडवेज बसों, सिटी बसों जैसे सार्वजनिक वाहनों का इस्तेमाल अधिक करें। उन्होंने अपने मंत्रियों से भी कुछ इसी तरह का आग्रह किया है। उन्होंने अधिकारियों से भी अनुरोध किया है कि वे भी डीजल-पेट्रोल की खपत कम करने की दिशा में काम करें। सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों से भी उन्होंने लगभग इसी तरह का अनुरोध किया है। एक बार नहीं, अनेक बार किया है ताकि कोई उनके अनुरोध को हल्के में न ले। भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने इस दिशा

में काम करना आरंभ भी कर दिया है। प्रधानमंत्री ने अपने काफिले के वाहनों की तादाद घटाई तो 'महाजनो येन गता स पंथाः' की रीति-नीति पर काम करते हुए उनके मंत्रियों ने भी उस पर अमल प्रारंभ कर दिया है। गृहमंत्री, रक्षामंत्री ने भी अपने काफिले की गाड़ियों की संख्या घटा दी है। भाजपा शासित राज्यों उत्तर, प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, ओडिशा और असम आदि राज्यों के मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों के काफिलों में भी वाहनों की संख्या घट गई है। एकाध न्यायाधीश तो साइकिल चलाकर न्यायालय पहुंचे हैं। इन संदेशों के गहरे निहितार्थ हैं, जिन्हें समझे जाने की जरूरत है।

मध्य-पूर्व संकट के मद्देनजर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों के मद्देनजर प्रधानमंत्री द्वारा उठाया गया यह कदम बेहद मायनेखेज है। भले ही यह निर्णय देर से लिया गया हो लेकिन 'जब जागे तभी सबेरा।' इस निर्णय को दिखावे का विषय नहीं बनना चाहिए वरन देश के हर आम और खास नागरिक को इस दिशा में सोचना चाहिए और तदनुरूप कार्य व्यवहार करना चाहिए। वैसे भी जो राष्ट्र अर्थ संयम के सिद्धांतों का पालन नहीं करता, वह दुखी रहता है। आय और व्यय के बीच संतुलन तो होना ही चाहिए। इतने गंभीर विषय पर राजनीति करना देश को संकट के दलदल में झोंकने जैसा है? यह किसी से छिपा नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति तक साइकिल चलाकर अपने फार्म हाउस जाते रहे हैं फिर भारत में बेवजह राजनीतिक अहमन्यता का प्रदर्शन क्यों? दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले देश के मुखिया को अगर ऊर्जा के समुचित इस्तेमाल की नसीहत देनी पड़ रही है तो इसका मतलब है कि खतरा बड़ा है और देशवासियों ने अपने विवेक से काम नहीं लिया तो पानी सिर से ऊपर बह सकता है। देश को इसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

अमेरिका और ईरान की अपनी-अपनी नाकेबंदी के वैश्विक प्रभाव भी किसी से छिपे नहीं हैं। अमेरिका में पेट्रोल का वैसे तो कोई संकट नहीं है लेकिन वहां भी पेट्रोल की कीमत में 7.5 प्रतिशत का इजाफा हो गया है। ब्रिटेन में डीजल की कीमत 33 प्रतिशत बढ़ गई हैं। घर को उष्ण बनाए रखने के लिए एलपीजी का उपयोग लगभग बंद कर दिया गया है। दक्षिण कोरिया में नहाने में शॉवर के न्यूनतम उपयोग, सप्ताहांत में ही वाशिंग मशीन चलाने और सरकारी दफ्तरों में लिफ्ट बंद करने जैसी कुछ व्यवस्थाएं लागू की गई हैं। चीन, फ्रांस, स्पेन, इटली जैसे देशों में भी पेट्रोल-डीजल और गैस के दाम बढ़ा दिए गए हैं। भारत में अभी पेट्रोल के दाम में 3 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी करनी पड़ गई है। अमेरिका और ईरान की तनातनी कम नहीं हुई तो अन्य क्षेत्रों में भी मुद्रासफीति की सुरसा अपने मुंह फैला सकती है।

दरअसल, इस निर्णय को सरकार की विवशता के तौर पर ही लिया जाना चाहिए। इसमें जनता को बेवजह परेशान करने की मानसिकता तलाशना, वास्तविकता से मुंह मोड़ने जैसा है। प्रधानमंत्री मोदी की इस बात में दम है कि भारत में कच्चे तेल के बड़े कुएं न होने की वजह से तेल आयात करना हमारी विवशता है।

सवाल इस बात का भी है कि हमें इस मुद्दे पर अमल कर अपने देश को आगे ले जाना है या दिखावे की सामाजिक संस्कृति को आगे बढ़ाना है। नीति भी कहती है कि धनार्जन और धन का संरक्षण यत्नपूर्वक किया जाना चाहिए। 'धनात धर्मः ततः सुखम।' धन रहेगा तभी धर्म भी होगा और धर्म रहेगा तभी सुख भी मिलेगा। अब यह हमें तय करना है कि हमें ऊर्जा संरक्षण को महत्व देना है या उसके अंधाधुंध मनमाने उपयोग को। फैसला हमारा है कि हम इस बावत केवल कुछ दिनों का दिखावा करेंगे या अपने जीवन व्यवहार में भी अर्थ संयम और ऊर्जा संरक्षण की जरूरतों को सतत अहमियत देंगे।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

निशाना

झूठों के घर खुशियों वाला मेला है...!

धर्मराज देशराज

जिनको अक्सर ख्वाबों में ही देखा है
लगता उनसे जीवन भर का रिश्ता है
उनके पीछे भीड़ खड़ी है झूठों की
हमने भी तो सच का दामन थामा है।
नाकामी से मैं अपनी घबराऊँ क्यों
मैने उम्मीदों का दामन थामे रक्खा है।
सच को साबित करने में कस्मे खाता
मुझको लगता है इन्साँ वो झूठा है
सच्चाई करती है फाँके अक्सर ही
झूठों के घर खुशियों वाला मेला है।
मात-पिता की सेवा जिस घर में होती
उस घर में खुद ही रब दस्तक देता है।
देखे मेरी आँखों में फिर कोई ज़रा
अश्क नहीं है 'धरम' खून ये ताज़ा है।

न्यू गैजेट

कंप्यूटर वाले सारे काम कर देता है वन प्लस पैड 4, स्लीक बॉडी के साथ टॉप परफॉर्मेंस

कल्पना कीजिए, आप किसी कैफे या क्लास में हैं। आपके अगल-बगल वाले लोग अपने भारी-भरकम लैपटॉप के साथ उलझे हुए हैं। सिर्फ लैपटॉप ही भारी-भरकम नहीं हैं, बल्कि उनके चार्जर और केबल ने अलग ही जंजाल फैला रखा है। ऐसे में आप अपने बैग से ऐसा स्लीक डिवाइस निकालते हैं, जो लगभग 5 रुपये के सिक्के जितना पतला है लेकिन उसकी ताकत किसी भी कंप्यूटर से कम नहीं है।

बात वन प्लस पैड 4 की हो रही है। इसकी जो बात सबसे पहले ख़ास , वो है इसका बेहद स्लीक और स्लिम डिजाइन। सिर्फ 5.94mm की मोटाई और मेटल यूनिबॉडी फिनिश इसे एक लग्जरी डिवाइस का अहसास देती है। मेरी राय में इस बनावट का जवाब फिलहाल किसी लैपटॉप के पास नहीं है। इस स्लिमनेस का फायदा टैबलेट को कैरी करते हुए भी मिलता है क्योंकि लैपटॉप से अलग ये बैग में कहीं खो सा जाता है। इसके अलावा 664.3 ग्राम वजन के साथ यह भारी भी नहीं लगता। हमें इसका ड्यून ग्लो कलर रिव्यू के लिए मिला था, जो कि प्रोफेशनल मीटिंग्स से लेकर कैफे वाइब्स तक हर जगह फिट बैठता है। बनावट और डिजाइन के मामले में इस टैबलेट की जितनी तारीफ की जाए कम है और मैं इस सेगमेंट में इसे फुल मार्क्स देना चाहूंगा।

Netflix पर डार्क सीन्स हों या कलर्ड ग्राफिक्स, डॉल्बी विजन की बदौलत हर डिटेल साफ नजर आती है। इसके अलावा इसमें 8 स्पीकर (4 वूफर और 4 ट्वीटर) भी दिए गए हैं, जो पूरे एक्सपीरियंस को कंप्लीट करते हैं। इस डिवाइस पर कोई फिल्म देखना या म्यूजिक सुनना ऐसा अनुभव देता है मानो साउंड ने आपको चारों तरफ से घेर लिया हो।

परफॉर्मेंस ऐसी जैसे कोई बीस्ट: अक्सर टैबलेट्स लुक्स में अच्छे होते हैं, पर काम में धीमे पड़ जाते हैं। OnePlus ने इस अवधारणा को ही बदलने की कोशिश की है। Snapdragon 8 Elite Gen 5 प्रोसेसर के साथ यह डिवाइस एक पावरहाउस है। इस पर हैवी गेमिंग से लेकर वीडियो एडिटिंग तक बहुत आसान है। कलाकारों और नोट-टेकर्स के लिए OnePlus Stylo Pro एक जरूरी एक्सेसरी है। 16,000 प्रेशर पॉइंट्स के साथ यह इतना सटीक है कि स्क्रीन पर लिखते समय आपको जरा भी लैग महसूस नहीं होता। यह ठीक वैसा ही अहसास देता है जैसे आप एक असली पेंसिल से डायरी पर लिख रहे हों। इतना ही नहीं, इसके साथ बड़ी स्क्रीन पर UI को कंट्रोल करना मजेदार अनुभव देता है। स्टूडेंट्स के लिए मुझे यह एक्सेसरी काम की लगी। सोचिए एक टैबलेट में 13,380mAh की बैटरी ! इसे खत्म करना अपने आप में एक चैलेंज बन जाता है। इसकी ये खूबी भी इसे लैपटॉप से बेहतर बनाती है, जिसे हर 4-5 घंटे में चार्जर की याद सताने लगती है। OnePlus Pad 4 को एक बार फुल चार्ज करने के बाद आप इसे लेकर बेफिक्र हो सकते हैं।

नॉलेज

रेगिस्तान की 'बुलेट ट्रेन' को माना जाता है दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका और मैक्सिको का रोड रनर

आपने चीन और जापान में दौड़ने वाली बुलेट ट्रेन तो काफी बार देखी होगी लेकिन क्या आपने रेगिस्तान की बुलेट ट्रेन देखी है? हम एक ऐसे पक्षी के बारे में बात कर रहे हैं जो रेगिस्तान की रेत में बंदूक से निकली गोली जैसी स्पीड से भागता है। हम बात कर रहे हैं रोड रनर की।

रेगिस्तान की गर्म रेत पर एक ऐसा पक्षी दौड़ता है जो देखने में बुलेट ट्रेन जैसा लगता है। इसका नाम है रोड रनर। लोग इसे रेगिस्तान की 'बुलेट ट्रेन' कहते हैं क्योंकि यह बिना किसी पटरी के रेत पर आश्चर्यजनक तेजी से भागता है। प्रकृति ने रेगिस्तान में अपना एक अनोखा 'स्पीडस्टर' पैदा किया है। रोड रनर मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका और मैक्सिको के रेगिस्तानी इलाकों में पाया जाता है। यह पक्षी उड़ने की बजाय जमीन पर दौड़ना ज्यादा पसंद करता है। इस पक्षी की अधिकतम दौड़ने की स्पीड 20-26 मील प्रति घंटा (लगभग 32-42 किलोमीटर प्रति घंटा) तक पहुंच सकती है। यह उड़ने वाले पक्षियों में सबसे तेज दौड़ने वाले पक्षी के रूप में रिकॉर्ड है। छोटे-छोटे फटकनों में यह और भी तेज हो जाता है। इसकी सबसे खास बात यह है कि यह बेहतरीन शिकारी भी है। रोड रनर सांपों, छिपकलियों, कीड़ों, छोटे स्तनधारियों और यहां तक कि जहरीले रैटल स्नेक का भी शिकार कर लेता है। यह सांप को चोंच से मारकर या उसे पीटकर मार डालता है. इसकी तेज स्पीड और चतुराई उसे शिकार पकड़ने में मदद करती है। रोड रनर का शरीर लंबा और पतला होता है, पूंछ लंबी होती है जो संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। इसके पैर मजबूत और तेज दौड़ने के लिए बने हैं। यह उड़ भी सकता है लेकिन जरूरत पड़ने पर ही उड़ता है। ज्यादातर समय यह जमीन पर चलता-दौड़ता रहता है।

रेगिस्तान का बादशाह: वैज्ञानिकों के अनुसार रोड रनर रेगिस्तान की कठोर परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए पूरी तरह अनुकूलित है। यह कम पानी में भी रह सकता है और अपना अधिकांश पानी शिकार से प्राप्त करता है। दिन के समय गर्मी से बचने के लिए यह अपनी गतिविधियां सुबह-शाम करता है। सोशल मीडिया पर इस पक्षी की तस्वीरें और वीडियो वायरल हो रहे हैं। लोग हैरान हैं कि इतनी तेज स्पीड कैसे संभव है? वाइल्डलाइफ प्रेमी इसे 'रेगिस्तान का सुपरहीरो' कह रहे हैं.। कई लोग इसे न्यू मैक्सिको का राज्य पक्षी भी बताते हैं। रोड रनर की क्षमताएं ना सिर्फ शिकार के लिए बल्कि शिकारियों से बचने के लिए भी उपयोगी है। जब कोई खतरा महसूस होता है तो यह अपनी तेज रफ्तार से भाग निकलता है। हालांकि यह पूरी तरह उड़ नहीं सकता, लेकिन उसकी दौड़ किसी बुलेट जैसी लगती है।

नर्स ने फांसी लगाकर की आत्महत्या, 4 महीने पहले बेटे ने भी की थी खुदकुशी

गुना। दोपहर मेट्रो

गुना में एक नर्स ने घर के छत पर बने कमरे में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। महिला रोजाना की तरह बीती रात भी खाना खाकर पति के साथ बिस्तर पर सोई थी लेकिन आधी रात को जब पति की नींद खुली तो वह बिस्तर पर नहीं थी। पति ने घर में पत्नी को ढूंढा तो छत पर बने कमरे में पत्नी फांसी के फंदे पर झूलती मिली। पत्नी को फांसी पर लटका देख पति सन्न रह गया। पति ने आस-पड़ोस के लोगों को बुलाया और पत्नी को अस्पताल लेकर पहुंचा लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। गुना शहर के कोतवाली थाना क्षेत्र के शीतला माता मंदिर इलाके में रहने वाले शंकर सेलर की पत्नी शांति सेलर ने शनिवार-रविवार की दरम्यानी रात घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। शांति एक प्राइवेट अस्पताल में नर्स थी। वो रोजाना की तरह शनिवार को शाम को अस्पताल से वापस घर लौटी और रात में खाना खाकर पति के साथ बिस्तर पर सोई थी। इसके बाद जब रात करीब 3 बजे पति शंकर की नींद खुली तो शांति बिस्तर पर नहीं थी। वो पत्नी को ढूंढते हुए ऊपर के कमरे में पहुंचा तो पत्नी को फांसी के फंदे पर झूलता देखा। पति शंकर ने आसपड़ोस के लोगों को बुलाया और पत्नी को फांसी के फंदे से उतारकर अस्पताल लेकर पहुंचा, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

पति शंकर ने बताया कि चार महीने पहले उनके बेटे ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। बेटा भी एक निजी हॉस्पिटल में काम करता था। बेटे की मौत का शांति को सदमा लगा था, बेटे की मौत के बाद से वो सदमे में थी और किसी से ज्यादा बातचीत भी नहीं करती थी। संभवत- बेटे की मौत के गम में ही शांति ने अपनी जान दी है। पुलिस को घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है, जिसके कारण अभी इस बात का खुलासा नहीं हो पाया है कि शांति ने आखिर खुदकुशी क्यों की है। शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया है।

शिक्षा से खिलवाड़: निकायों और पंचायतों ने राशि निकालने के बाद अधूरा छोड़ा काम

छतरपुर में निर्माण एजेंसियों ने खाते से गायब की राशि, खंडहर में तब्दील हुए अधूरे स्कूल भवन

छतरपुर। दोपहर मेट्रो

जिले के शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार और लापरवाही का एक ऐसा चेहरा सामने आया है जिसने मासूम बच्चों के भविष्य को अंधकार में धकेल दिया है। शासन द्वारा स्कूलों के नए भवनों के निर्माण के लिए लाखों रुपये स्वीकृत किए गए, लेकिन निर्माण एजेंसियों ने काम पूरा किए बिना ही राशि का आहरण कर लिया। इसका नतीजा यह है कि आज जिले के कई स्कूल भवन खंडहर में तब्दील हो रहे हैं और सैंकड़ों छात्र जर्जर और असुरक्षित कमरों में बैठकर अपनी जान जोखिम में डालकर पढ़ाई करने को मजबूर हैं।

जिले के नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल भवनों के सालों से अधूरे पड़े रहने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि जिन भवनों के लिए बजट जारी हुआ, उनकी पूरी राशि संबंधित एजेंसियों ने निकाल ली, लेकिन काम को बीच में ही लटका दिया गया। समय बीतने के साथ ये अधूरे ढांचे अब खंडहर बनते जा रहे हैं। राजापुरवा लवकुशनगर क्षेत्र के वार्ड 8 में करीब 10 साल पहले 8 लाख रुपये की लागत से माध्यमिक स्कूल भवन की स्वीकृति मिली थी। नगर परिषद ने राशि तो निकाल ली, लेकिन केवल दीवारें खड़ी कर काम छोड़ दिया। आज यहां 154 छात्र-छात्राएं मात्र चार छोटे कमरों में पढ़ाई करने को विवश हैं। चौका पंचायत- सागर रोड स्थित इस पंचायत में 14 साल पहले 6 लाख रुपए की लागत से स्कूल निर्माण शुरू हुआ था। निर्माण एजेंसी ने पूरी राशि का आहरण कर लिया, लेकिन भवन आज भी अधूरा है और इसकी दीवारें अब खुद ही गिरने लगी हैं। यहां कक्षा 1 से 8वीं तक के 135 छात्र पुराने और जर्जर भवन में बैठने को मजबूर हैं।

मानपुरा- 12 लाख खर्च, फिर भी छत से टपकता पानी

मानपुरा गांव में भी ऐसी ही तस्वीर देखने को मिली है। वर्ष 2011-12 में 12 लाख रुपए की लागत से भवन खड़ा तो किया गया, लेकिन न तो फर्श बना, न बिजली की फिटिंग हुई और न ही टाइल्स लगाई गईं। सबसे गंभीर बात यह है कि भवन की छत इतनी कमजोर है कि बारिश के दौरान पानी सीधा कमरों में टपकता है, जिससे बच्चों की पढ़ाई में बाधा आती है। यहां के 125 छात्र भी पुराने और असुरक्षित भवन में ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

रिकवरी के आदेश- क्या बच्चों को मिलेगा उनका हक?

इन मामलों के उजागर होने के बाद अब प्रशासन की नींद टूटी है। डीपीसी छतरपुर, एपीएस पांडेय के अनुसार, जिन निकायों और पंचायतों ने राशि निकालने के बाद काम अधूरा छोड़ा है, उनके खिलाफ वसूली के आदेश जारी कर दिए गए हैं। विभाग का दावा है कि जैसे ही राशि वापस प्राप्त होगी, इन अधूरे भवनों को पूरा कराया जाएगा। हालांकि, सवाल यह उठता है कि पिछले एक दशक से अधिक समय से जो बच्चे इन जर्जर भवनों में पढने् को मजबूर रहे, उनकी इस शिक्षा की क्षति का जिम्मेदार कौन है?

कमाल का आइडिया! राजगढ़ जिले की ये बेटियां रद्दी से चमका रहीं जरूरतमंद बच्चों की किस्मत

राजगढ़। दोपहर मेट्रो

जहां आज के दौर में पुरानी किताबें और कॉपियां रद्दी के भाव बिक जाती हैं, वहीं मध्य प्रदेश के ब्यावरा की चार बेटियों ने इन्हीं फेंके हुए पन्नों में किसी गरीब बच्चे के सपनों की चमक तलाश ली। इन बेटियों ने यह साबित कर दिया कि बदलाव लाने के लिए बड़ी दौलत नहीं, बल्कि बड़ा दिल और संवेदनशील सोच चाहिए।

कक्षा 12वीं में पढ़ने वाली अदिति शर्मा, अक्षरा अग्रवाल, अक्षिता अग्रवाल और भूमिका लश्करे ने गर्मी की छुट्टियों में पुरानी कॉपियों के बचे हुए पन्नों से रफ नोटबुक बनानी शुरू की, तब शायद उन्हें अंदाजा भी नहीं था कि उनका यह छोटा-सा प्रयास कई जरूरतमंद बच्चों की जिंदगी में उम्मीद की नई रोशनी बन जाएगा। इन बेटियों ने महसूस किया कि शहर के हजारों घरों में

ऐसी कॉपियां और किताबें धूल खा रही हैं, जिन्हें सही हाथों तक पहुंचाकर किसी बच्चे की पढ़ाई बचाई जा सकती है। बस फिर क्या थाज्चारों बेटियां हर शाम घर-घर पहुंचने लगीं। लोगों से पुरानी कॉपियां, किताबें व स्कूल बैग मांगती हैं, ताकि गरीब परिवार का बच्चा पढ़ाई से दूर न हो। शिवधाम से सुदामा नगर तक उनकी मुहिम अब लोगों के दिलों को छू रही है। ये छात्राएं पुरानी कॉपियों के खाली पन्ने अलग करती हैं, उन्हें बाइडिंग करवाकर नई नोटबुक का रूप देती हैं। ये छात्राएं अब तक करीब 2 हजार पुरानी कॉपियां जुटा चुकी हैं। इन 2 हजार पुरानी कॉपियों से वे 300 नई नोटबुक तैयार करवा चुकी हैं। इन चारों बेटियों का सपना है कि ये 1000 नोटबुक तैयार करेंगी। ताकि जरूरतमंद बच्चों तक इन्हें पहुंचा सकें। वे चाहती हैं कि किसी भी बच्चे की पढ़ाई का सपना केवल गरीबी के कारण न टूटे। इसलिए उन्होंने इस यूनिक आइडिया पर काम शुरू किया है।इन चार बेटियों ने अपने इस यूनिक आइडिया पर परिणाम देने वाला काम करने के लिए शहरवासियों से अपील की है कि पुरानी शैक्षणिक सामग्री को रद्दी में बेचने के बजाय वे किसी बच्चे के भविष्य के लिए दान करें। ये दान वे उन्हें दे सकते हैं ताकि एक खानी पन्ना किसी दूसरे बच्चे के सपनों की शुरुआत बन सके।

बुजुर्ग ने जिंदा रहते कराया खुद का मृत्युभोज

शिवपुरी। दोपहर मेट्रो

जिले से चौंका देने वाला मामला सामने आया है। जिले के करैरा क्षेत्र के ग्राम हाजीनगर में शनिवार को एक बुजुर्ग ने अपनी मौत से पहले ही मृत्यु भोज का आयोजन कर दिया। इस कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए। बुजुर्ग को यह चिंता थी कि उसकी मौत के बाद उसके परिवार के लोग यह आयोजन करेंगे या नहीं। इसी के चलते बुजुर्ग ने यह बड़ा फैसला लिया। दरअसल, हाजीनगर में रहने वाले 60 वर्षीयकल्याण पाल के मन में वर्षों से एक ही चिंता थी कि उसके मरने के बाद अंतिम संस्कार से लेकर मृत्यु भोज से लेकर अन्य कार्यक्रम होगा या नही। इसी सवाल ने उन्हें ऐसा कदम उठाने पर मजबूर कर दिया। इधर इस पूरे कार्यक्रम को लेकर पूरे क्षेत्र में चर्चा बनी हुई है।

आयोजन से दो दिन पहले कल्याण पाल खुद प्रयागराज पहुंचे। वहां उन्होंने अपने नाम से विधि.विधान के साथ कर्मकांड कराया। इतना ही नहीं, अस्थि विसर्जन की परंपरा की तरह गंगा स्नान भी किया और फिर वापस आकर अपने गांव में 15 मई से 24 घंटे के लिए सीताराम रामधुन पाठ शुरू कराया। पूरे

गांव में धार्मिक माहौल बना रहा और लोग इस अनोखे आयोजन को लेकर चर्चा करते रहे। धार्मिक कार्यक्रमों के बाद दोपहर करीब 4 बजे से बड़े स्तर पर भंडारा शुरू हुआ। यह आयोजन पूरी तरह मृत्यु भोज की तरह किया गया था, लेकिन फर्क सिर्फ इतना था कि जिसका मृत्यु भोज हो रहा था, वह खुद लोगों का स्वागत करता नजर आ रहा था। बताया जा रहा है कि गांव और आसपास के क्षेत्रों से हजारों लोग आयोजन में पहुंचे। ग्रामीणों के मुताबिक करीब 5 हजार लोग इस भोज में शामिल हुए। आयोजन में खाने.पीने और बैठने की विशेष व्यवस्था की गई थी। पहले सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था मृत्यु भोज का आमंत्रण कार्ड। कुछ दिन पहले इस आयोजन का निमंत्रण कार्ड सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हुआ था। कार्ड में लिखा था कि अपना अपने सामने अंतिम गंगा पूजन, भंडारा इस तारीख को है। साथ ही कार्ड पर एक शायरी भी लिखी थी, जिसमें यह लिखा था कि मुझे तो अपनों ने लूटा, गैरों में कहां दम था, मेरी कश्ती वहां डूबी जहां पानी कम था। कार्ड वायरल होने के बाद से ही लोग यह जानने को उत्सुक थे कि आखिर ऐसा आयोजन क्यों किया जा रहा है। कल्याण पाल ने बताया कि वह अपने पिता के इकलौते बेटे है और उनकी शादी भी नही हुई। ऐसे में उनकी मौत के बाद यह सब काम कौन करेंगा, इसको लेकर वह काफी पशोपेश में थे।

सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों का व्यापार पैसे के लालच में आकर युवा बन रहे तस्कर

बुरहानपुर। दोपहर मेट्रो

नगर में अवैध देशी पिस्टलों का धांधा हाइटेक हो गया। सोशल मीडिया पर पिस्टल की खरीदी और तस्करी का नेटवर्क तैयार हो रहा है। हथियार निर्माण और तस्करी से जुड़े लोग ग्राहकों से रूबरू नहीं बल्कि ऑनलाइन सौदा कर अंतर्राज्जीय स्तर पर हथियार भेज रहे हैं। पूरा कारोबार सोशल मीडिया पर हो रहा है। पुलिस से नचने के लिए गांव के सामान्य एवं आर्थिक रूप से कमजोर युवाओं को 5 से 10 हजार के लालच देकर अवैध व्यापार में घकेला जा रहा है। ये खुलासा रविवार को एसपी आशुतोष बागरी ने किया। उन्होंने कहा कि खकनार थाने के ग्राम पाचोरी में एक रैकेट सक्रिय है, जो लंबे समय से अवैध पिस्टल निर्माण कर अंतरराज्यीय स्तर पर तस्करी कर रहा है। ये पिस्टल की मांग प्रदेश समेत अन्य राज्यों में चोरी और हिंसक वारदातों के लिए होती है, इसलिए जल्द

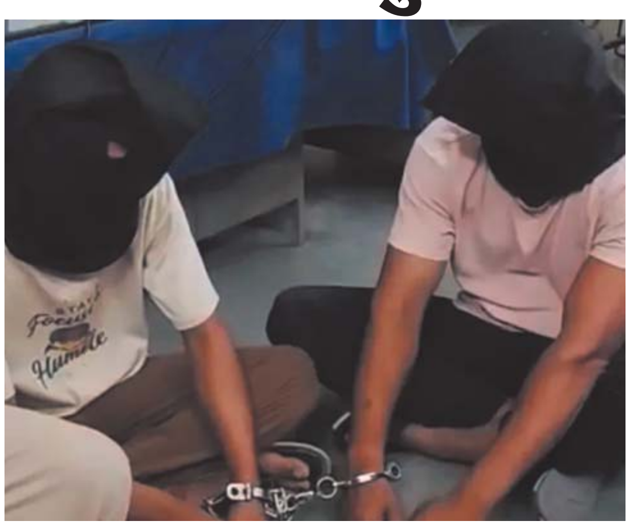

ही इस नेटवर्क को खत्म किया जाएगा। महाराष्ट्र की तर्ज पर पुलिस अब लगातार ऐसे स्थानों पर दबिश देकर संदिग्ध लोगों को पकड़ेगी जो इस कार्य में जुड़े है या सहयोग कर रहे है। खकनार पूलिस द्वारा पकड़े गए आरोपियों के साथ अन्य राज्यों में पकड़ाए आरोपियों का अपराधिक रिकॉर्ड खंगाला जा रहा है। ऐसे लोगों को निगरानी बनाकर न्यायालय के माध्यम से सख्त सजा दिलाई जाएगी।

गलत रास्ता छोड़ मुख्य धारा से जुड़ें

नवागत एसपी ने कहा कि, अइस रैकेट में पूरा गांव नहीं बल्कि, कुछ लोग हैं, लेकिन बदनाम पूरा गांव होता है। जो भी भटके हुए युवा अपराध का रास्ता छोड़कर समाज की मुख्य धारा में शामिल होना चाहते हैंउन्हें पुलिस प्रशासन उनकी हर संभव मदद और पुनर्वास का प्रयास किया जाएगा। जो लोग जानबूझकर अपराधिक गतिविधियों में संलिप्त रहकर शांति व्यवस्था को भंग करेंगे उन्हें किसी भी सूरत बख्शा नहीं जाएगा और उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

तरबूज खाने से नहीं, अब पक्षी के संक्रमण से मौत होने की आशंका

श्योपुर। दोपहर मेट्रो

शहर के खातौली तिराहे के पास रहने वाले इंद्र सिंह परिहार और उनके पुत्र विनोद की संदिग्ध परिस्थितियों में तबियत बिगडने और फिर रैफर के दौरान इंद्र सिंह की मौत होने के मामले में अब कोतवाली पुलिस ने भी मर्ग दर्ज कर जांच प्रारंभकर दी है। मामले में जांच के बाद डॉक्टरों ने अब इस मामले में इंद्र की मौत को लेकर नई आशंका जताई है जिससे मामला पूरा पलट सकता है। उल्लेखनीय है कि सुसनेर (आगर-मालवा) के निवासी इंद्रसिंह परिहार पुत्र कर्म सिंह अपने परिवार के साथ खातौली तिराहे के पास वसीम कुरैशी के फार्म हाउस पर रहते थे। शुक्रवार की सुबह 6 बजे के आसपास इंद्र सिंह (43) और उनके पुत्र विनोद (21) के सीने में जलन होने लगी। परिजनों के अनुसार जलन को कम करने के उद्देश्य से दोनों से तरबूज खा लिया और उसके बाद ज्यादा तबितय बिगड़ गई तो परिजन अस्पताल ले गए। इंद्र सिंह की गंभीर हालत देखते हुए चिकित्सकों ने उन्हें कोटा रैफर कर दिया। लेकिन कोटा जाते समय रास्ते में ईटावा के पास उनकी मौत हो गई।

हालांकि इंद्र सिंह की मौत और विनोद की गंभीर हालत का वास्तविक कारण अभी सामने नहीं आया है, लेकिन आशंक व्यक्त की जा रही है कि कोई पक्षी से भी हो सकता है, क्योंकि ये दोनों पोल्ट्री फार्म पर काम करते थे। वहीं दूसरी ओ किसी केमिकल का भी दुष्प्रभाव होने की आशंका व्यक्ति की जा रही है, लेकिन चिकित्सक साफ तौर पर रहे है कि तरबूज खाने से मौत होने जैसी स्थितियां कहीं से नजर नहीं आ रही है। वहीं पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में प्रारंभिक रूप से पाया गया है कि गला चोक होने से इंद्र सिंह की मौत हुई है। मृतक इंद्रसिंह के पुत्र विनोद का जिला अस्पताल में उपचार चल रहा है और आईसीयू में वेंटीलेटर पर है। दो दिन बाद भी हालत अभी स्थिर है। चिकित्सकों का कहना है कि विनोद की हालत पहले जैसी ही है।

जिला अस्पताल श्योपुर के सिविल सर्जन डॉ. आरबी गोयल ने बताया कि दोनों पिता-पुत्र की ये स्थिति कैसे हुई, इसके बारे में स्पष्ट कुछ नहीं कह सकते। पोस्टमॉर्टम के बाद बिसरा सैंपल लिए गए हैं, जिन्हें जांच के लिए भेजा जाएगा, इस रिपोर्ट के बाद ही स्थिति साफ होगी।

राजगढ़ी घाट में तेज रफ्तार हाइवा ने चार मवेशियों को कुचला

डिंडोरी। जिले के मेहदवानी थाना क्षेत्र के राजगढ़ी घाट में तेज रफ्तार हाइवा ने सड़क किनारे बैठे चार मवेशियों को कुचल दिया। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। ग्रामीणों ने पुलिस को बताया कि हाइवा क्रमांक एमपी 19 जेडबी 6863 मंडला जिले के चाबी क्षेत्र स्थित रेत खदान से रेत भरकर शहपुरा की ओर जा रहा था। हादसे में सभी मवेशियों की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद हाइवा चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया।

मेट्रो एंकर

साप्ताहिक श्रमदान 5.0 का 32वां चरण संपन्न

श्रमदान अभियान बना जनजागरुकता की मिसाल

गंजबासौदा। दोपहर मेट्रो

यदि नदियां जीवित हैं तो सभ्यता जीवित है इसी संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से चल रहे साप्ताहिक श्रमदान अभियान 5.0 के 32वें चरण का आयोजन उत्साह और जनभागीदारी के साथ संपन्न हुआ। अभियान में प्रशासनिक अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों ने एकजुट होकर नदी संरक्षण और स्वच्छता का संदेश दिया। कार्यक्रम में तहसीलदार, नगरपालिका अध्यक्ष, सांसद प्रतिनिधि सहित विश्व हिंदू परिषद, पंचतत्व संरक्षक समिति, दाऊ फाउंडेशन, फीड बैक फाउंडेशन और नगर परिषद के सदस्यों ने स्वयं नदी में उतरकर श्रमदान किया। सभी ने मिलकर नदी में फैली जलकुंभी और कचरे को निकालने का कार्य किया।

लगभग दो घंटे तक चले श्रमदान में नदी की सतह पर फैली भारी मात्रा में जलकुंभी को बाहर निकाला गया, जिससे जल प्रवाह बाधित हो रहा था।

इसके अलावा नदी किनारों पर फैले प्लास्टिक कचरे, पूजन सामग्री और अन्य अपशिष्ट पदार्थों को भी एकत्रित कर हटाया गया। अभियान के दौरान वक्ताओं ने कहा कि नदियां केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों की धरोहर हैं। यदि समय रहते समाज जागरूक नहीं हुआ, तो जल संकट और प्रदूषण भविष्य में गंभीर समस्या बन सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार जलकुंभी पानी में ऑक्सीजन की मात्रा कम कर देती है, जिससे जलीय जीवों का जीवन प्रभावित होता है। वहीं प्लास्टिक और अन्य प्रदूषण जल की गुणवत्ता को खराब कर मानव स्वास्थ्य के लिए भी खतरा पैदा कर रहे हैं। अभियान से जुड़े सदस्यों ने कहा कि नदी संरक्षण केवल प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। लोगों को अपनी आदतों में बदलाव लाना होगा और नदी किनारों पर कचरा फेंकने तथा पूजन सामग्री विसर्जित करने जैसी प्रवृत्तियों को रोकना होगा। कार्यक्रम ने एक बार फिर यह संदेश दिया कि जब समाज, प्रशासन और सामाजिक संगठन मिलकर कार्य करते हैं, तब सकारात्मक परिवर्तन संभव होता है। श्रमदान अभियान अब केवल सफाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह जनजागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी का जनआंदोलन बनता जा रहा है।

न्यूज विंडो

सुलभ शौचालय का पानी मां नर्मदा की धारा में मिल रहा

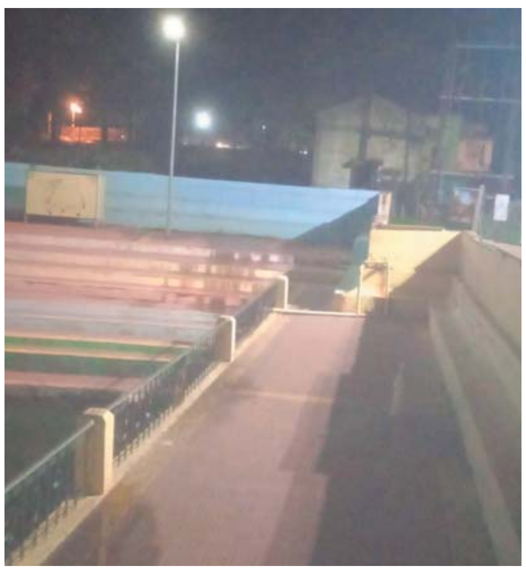

अमरकंटक। अमरकंटक स्थित मां नर्मदा उद्गम स्थल के प्रथम गोमुख से निकलने वाली पवित्र धारा को लेकर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं का आरोप है कि गोमुख के आगे बने सुलभ शौचालय परिसर का गंदा पानी सीधे नर्मदा जी की धारा में मिल रहा है, जिससे धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ पर्यावरण को भी नुकसान पहुंच रहा है। बताया जा रहा है कि पूर्व में भी कुछ समाचार पत्रों द्वारा इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाया गया था। उस समय प्रशासन ने तत्काल कार्रवाई करते हुए संबंधित कॉम्प्लेक्स को बंद करा दिया था। लेकिन आरोप है कि बिना किसी स्थायी सुधार और उचित जल निकासी व्यवस्था के दोबारा शौचालय कॉम्प्लेक्स शुरू कर दिया गया। नर्मदा उद्गम स्थल पर प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु दर्शन और स्नान के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में यदि शौचालय का दूषित पानी सीधे पवित्र धारा में मिल रहा है तो यह न केवल स्वास्थ्य के लिए खतरा है, बल्कि धार्मिक आस्था पर भी चोट माना जा रहा है।

करीब 40 फीट ऊंचे बिजली के पोल से गिरा मजदूर, भर्ती

पांढुर्णा। पांढुर्णा पुलिस थाना परिसर में एक मजदूर करीब 40 फीट ऊंचे बिजली के पोल से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। वह बिजली पोल और केबल लाइन पर काम कर रअब लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि बिना सुरक्षा उपकरण मजदूरों से काम कराने वाले ठेकेदारों पर सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में ऐसे हादसों को रोका जा सके।हा था। हादसे के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत डायल 112 को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस टीम घायल को सिविल अस्पताल ले गई।

भीषण गर्मी में 40 से 50 मिनट हो रही पानी की सप्लाई

नर्मदा जल आवर्धन योजना प्यास बुझाने में नाकाम, 2 से 4 दिन बाद मिल रहा पानी

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

नगर में भीषण गर्मी के बीच नर्मदा जल आवर्धन योजना लोगों की प्यास बुझाने में नाकाम साबित होती नजर आ रही है। लगभग 33 करोड़ रुपए से अधिक लागत की इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य नगरवासियों को 24 घंटे शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना था, लेकिन जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल उलट दिखाई दे रही है।

नगर के विभिन्न वार्डों में कभी एक दिन, कभी दो दिन तो कहीं तीन-चार दिन छोड़कर मात्र 40 से 50 मिनट तक ही पानी की सप्लाई हो पा रही है, जिससे लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है वार्डवासियों का आरोप है कि नल चालू करने वाले कर्मचारी अपनी मनमानी कर रहे हैं और पानी सप्लाई का कोई निर्धारित समय नहीं है जिसके कारण लोग दिन-रात पानी के इंतजार में बैठे रहते हैं, लेकिन समय पर पानी नहीं मिल पाता कई वार्डों के अंतिम कनेक्शनों तक पानी पहुंच ही नहीं रहा जबकि कहीं बूंद बूंद पानी आ रहा है तो कहीं पर्याप्त मात्रा में सप्लाई हो रही है इस असमान व्यवस्था से नगरवासियों में भारी आक्रोश है।

कुछ वार्डों में सबसे पहले होती है सप्लाई शुरू

नगर के कुछ लोगों का आरोप है कि नगर के कुछ वार्डों में सुबह से ही पानी सप्लाई शुरू कर दी जाती है जबकि अन्य वार्डों में कोई समय निर्धारित नहीं है जिन वार्ड में सबसे पहले पानी की सप्लाई शुरू की जाती है वहां के पार्षद एवं जनप्रतिनिधियों का दबाव रहता है। एसडीएम सीजी गोस्वामी ने बताया कि लगातार शिकायतें मिल रही हैं। संबंधित अधिकारियों से चर्चा की गई है और जल्द ही व्यवस्था में सुधार किया जाएगा ताकि लोगों को पर्याप्त पानी मिल सके। साथ ही उन्होंने चेतावनी दी कि यदि कोई कर्मचारी मनमानी करता पाया गया तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

नगर में नहीं हो रही नियमित सप्लाई

बताया जा रहा है कि नगर में तीन साल पहले ही जबलपुर जिले के भेड़ाघाट से नर्मदा जल पहुंच चुका था। लम्हेटाघाट में बने अत्याधुनिक जल शोधन संयंत्र से तेंदूखेड़ा सहित सात नगरों को पानी उपलब्ध कराने की योजना बनाई गई थी। इसके लिए लगभग 40 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन बिछाई गई, लेकिन आज भी कई वार्डों में नियमित पानी की सप्लाई नहीं हो पा रही है।

कागजों तक सीमित रह गई योजना

लोगों का कहना है कि योजना केवल कागजों तक सीमित होकर रह गई है। पानी की कमी के कारण नागरिक अन्य जलस्रोतों पर निर्भर होने को मजबूर हैं। वहीं बिजली बंद होने या पाइपलाइन में खराबी आने पर तीन-तीन दिन तक पानी नहीं मिलता। टंकियों को भरने में लगभग 11 घंटे लगते हैं, जबकि सप्लाई शुरू होते ही मात्र तीन घंटे में टंकियां खाली हो जाती हैं कई बार पाइपलाइन फटने से भी जलापूर्ति बाधित हो जाती है।

बरमान रेतघाट पर स्नान करते युवक की डूबने से मौत

नरसिंहपुर। दोपहर मेट्रो

जिले के बरमान रेतघाट पर नर्मदा नदी में स्नान के दौरान एक युवक की डूबने से मौत हो गई। अमावस्या के अवसर पर हुए इस हादसे में सागर निवासी दो युवक गहराई में चले गए थे। नाविकों ने एक युवक को सुरक्षित बचा लिया, जबकि दूसरा लापता हो गया था। जिसका शव रविवार को घटनास्थल से 8 किमी दूर मिला।करेली थाना प्रभारी रत्नाकर हिंग्वे ने बताया कि पहले गुम इंसान का मामला दर्ज किया गया था। शव मिलने के बाद अब मर्ग कायम कर आगे की जांच शुरू कर दी गई है। रेस्क्यू ऑपरेशन में हवलदार बृजमोहन श्रीवास्तव, संजय ठाकुर, सिद्धार्थ पाराशर सहित एसडीईआरएफ टीम के अन्य सदस्य और स्थानीय गोताखोर शामिल थे।

कार्रवाई पर सवाल

बुजुर्ग महिला के साथ कथित मारपीट का मामला गरमाया

उज्जैन। दोपहर मेट्रो

उज्जैन में एक पारिवारिक विवाद उस समय गंभीर हो गया, जब कोतवाली थाने में पहुंची एक बुजुर्ग महिला के साथ कथित मारपीट का मामला सामने आया। पीड़ित परिवार का आरोप है कि थाने में मौजूद एक महिला पुलिसकर्मी ने कैंसर का ऑपरेशन करा चुकी बुजुर्ग महिला को थप्पड़ मार दिया, जिसके बाद उनकी हालत बिगड़ गई और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। घटना के बाद से परिवार पुलिस कार्रवाई पर सवाल उठा रहा है।

भोजशाला: मां वाग्देवी के चित्र सहित अंखड ज्योति को गर्भगृह में किया स्थापित

धार। दोपहर मेट्रो

शहर धार में स्थित भोजशाला को लेकर पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा जारी की गई नई गाइडलाइन के बाद आज एक नया इतिहास रचा गया। नई व्यवस्था के तहत अब हिंदू समाज को बिना किसी रोक-टोक के साल के 365 दिन पूजा करने का अधिकार मिल गया है। इस ऐतिहासिक फैसले के बाद सुबह से ही भोजशाला परिसर में भारी उत्साह, भक्ति और हर्षोल्लास का माहौल देखा गया। रविवार सुबह सूर्योदय होते ही हिंदू समाज और भोज उत्सव समिति के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में भोजशाला परिसर पहुंचे। भोज समिति के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं और श्रद्धालुओं ने मां वाग्देवी (देवी सरस्वती) का भव्य तैल चित्र लेकर परिसर में प्रवेश किया। भोजशाला में प्रवेश करते ही सबसे पहले सनातन परंपरा के अनुसार पूरे परिसर को गो-मूत्र छिड़ककर

शुद्ध किया गया। इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार और शंखध्वनि के साथ विधि-विधान से पूजा-अर्चना की शुरुआत हुई।

इस विशेष अवसर के लिए भोजशाला के गर्भगृह को रंग-बिरंगी और आकर्षक रंगोलियों से बेहद खूबसूरती के साथ सजाया गया था। एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, भोजशाला परिसर के बाहर स्थित ज्योति मंदिर की अखंड ज्योत को भी पूरे सम्मान के साथ गर्भगृह के भीतर लाकर स्थापित कर दिया गया। मां वाग्देवी के चित्र की स्थापना के दौरान वहां मौजूद जनसैलाब का उत्साह देखते ही बनता था। परिसर जय श्री राम और मां वाग्देवी की जय के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। इस ऐतिहासिक पल की खुशी में महिलाओं और युवाओं ने पारंपरिक नृत्य कर अपनी प्रसन्नता जाहिर की। इस धार्मिक अनुष्ठान की संवेदनशीलता और महत्ता को देखते हुए प्रशासनिक अमला भी पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। धार कलेक्टर राजीव रंजन मीणा और एसपी सचिन शर्मा खुद सुबह से ही मौके पर मौजूद रहे। अधिकारियों ने न केवल सुरक्षा और कानून व्यवस्था का जायजा लिया, बल्कि खुद भी पूजन प्रक्रिया में शामिल होकर मां वाग्देवी की आराधना की।

अंधे मोड़ पर तेज रफ्तार कार ने बाइकों को मारी टक्कर

हादसे में वृद्ध घायल, कार से 34 पेटी शराब जब्त

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

पाटन- तेंदूखेड़ा मार्ग पर रविवार शाम एक तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड़ी बाइकों से टकरा गई। हादसे में एक युवक घायल हो गया, जबकि कार में सवार लोग मौके से फरार हो गए घटना तेंदूखेड़ा पाटन मार्ग पर स्थित भौडी चौराहा के पास हुई हादसे के बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे तो उन्होंने कार के अंदर शराब की पेटियां देखीं इसकी सूचना भगवती मानव कल्याण संगठन के कार्यकर्ताओं को दी गई सूचना मिलते ही संगठन के सदस्य मौके पर पहुंचे और कार की जांच की।

इस दौरान कार से 34 पेटी अवैध शराब बरामद हुई। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई हादसे में घायल वृद्ध की पहचान भौडी निवासी सीताराम यादव उम्र 60 वर्ष के रूप में हुई है। उसे उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया। सूचना मिलने पर तेंदूखेड़ा थाना प्रभारी रावेंद्र बागरी पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे पुलिस ने अवैध शराब जब्त कर ली है और फरार

आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है इस हादसे में सड़क किनारे खड़ी दो बाइक एक साइकिल भी क्षतिग्रस्त हो गईं हैं मौके पर पहुंचे भगवती मानव कल्याण संगठन के सदस्यों ने क्षेत्र में लगातार अवैध शराब परिवहन होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इससे कई परिवार प्रभावित हो रहे हैं। संगठन ने स्थानीय विधायक और पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र सिंह से क्षेत्र में अवैध शराब के परिवहन पर रोक लगाने की मांग की है।

पटाखा गोदामों और विस्फोटक सामग्री के भंडारण को लेकर प्रशासन ने दिखाई सख्ती

मंडला। दोपहर मेट्रो

मंडला जिले में पटाखा गोदामों और विस्फोटक सामग्री के भंडारण को लेकर प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। रविवार को पुलिस और राजस्व विभाग की संयुक्त टीम ने ग्राम चटुआमार और ग्राम बिनेका स्थित पटाखा गोदामों का औचक निरीक्षण किया। जांच में अनियमितताएं मिलने पर दोनों गोदामों को सील कर दिया गया।

मेट्रो एंकर

नीट परीक्षा पेपर लीक एवं लाखों विद्यार्थियों के भविष्य के साथ हुए खिलवाड़ का जताया विरोध

जिला कांग्रेस ने नगर में निकाला मशाल जुलूस, की नारेबाजी

नरसिंहपुर। दोपहर मेट्रो

नीट परीक्षा पेपर लीक एवं लाखों विद्यार्थियों के भविष्य के साथ हुए खिलवाड़ के विरोध में जिला कांग्रेस नरसिंहपुर के आहवान पर मशाल जुलूस निकाला गया। मशाल जुलूस के दौरान सरकार के खिलाफ भारी नारेबाजी की गई।

राम मंदिर से सुभाष पार्क चौराहा तक निकाले गए इस विशाल मशाल जुलूस में कांग्रेसजनों ने विद्यार्थियों के समर्थन में जोरदार आवाज बुलंद करते हुए नीट परीक्षा में हुई अनियमितताओं की निष्पक्ष जांच एवं दोषियों पर कठोर कार्रवाई की मांग करते हुए शिक्षा मंत्री को बर्खास्त कर, सीबीआई जांच की मांग की। साथ ही कांग्रेस नेताओं ने कहा कि भाजपा सरकार में लगातार विभिन्न परीक्षाओं के पेपर लीक होते रहते हैं। साथ ही बढ़ती बेरोजगारी और महंगाई से हर नागरिक परेशान है। मशाल जुलूस में जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सुनीता पटैल, जिला कांग्रेस संगठन प्रभारी दीवान शैलेन्द्र सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष मैथिलीशरण तिवारी, वरिष्ठ नेता लाखन सिंह पटैल, प्रदेश

सचिव मनीष राय, डॉ.संजीव चाँदोरकर, प्रदेश सचिव अभिनव ढिमोले, अनुसूचित जनजाति अध्यक्ष हरिसिंह अहिरवार, जनपद अध्यक्षगण शैलेन्द्र राजपूत एवं सोबरन सिंह ठाकुर, जनपद उपाध्यक्ष कंछेदी पटैल, देवेंद्र शुक्ला, देवेंद्र पटेल गूंदरई, नगरपालिका प्रतिपक्ष नेता रुद्रेश तिवारी , पूर्व ब्लॉक अध्यक्षगण जिनेश जैन, छोटराजा कौरव, दिग्विजय सिंह, गणेश पटेल, मनीष साहू, रामरतन पटेल, ओमप्रकाश पटेल, सतीश सैनी, लखन पटेल, राजेंद्र कौरव, सूर्यकांत लोधी, धनीराम पटेल, अरविंद पटेल, नगराध्यक्ष रोहित पटैल, कमल जैन, राजीव दुबे, पवन पटेल, अरविंद पटेल, युवा कांग्रेस अध्यक्ष विवेक पटेल, एनएसयूआई अध्यक्ष ईशान राय, प्रतीक त्रिवेदी, अस्सू नेमा, अतुल चौरसिया, अब्दुल हकीम खान, मुकेश कटारे, अभय राय, मनोज राव, राजेन्द्र नेमा, अभिषेक शर्मा, शिवम् राय, शाश्वत राय, शुभम ठाकुर, प्रीतम पटेल आनंद चौरसिया, अभिषेक पटेल, जितेंद्र लोधी, संजय कौरव, अजय दुबे , भगवान सिंह गुजर, संजय मेहरा, सौरभ रिछारिया , देवेंद्र प्रजापति , राजा ठाकुर , अमित श्रीवास्तव, बुद्धि प्रकाश विश्वकर्मा , तोपसिंग महोबिया, रीतेश नामदेव, राजा राय, पलाश पटैल , यासीन मनचला ,नीलेश ढिमोले , निकिता सक्सेना , सत्यव्रत कौरव , प्रियंक कहार, गोल्डी खान, आजाद खान , बिट्टू किंग , निखिल सराठे , प्रिंस पटेरिया , सोमनाथ पटैल , संजय तिवारी ,महेंद्र लोधी ,विकास पटैल , शुभ गोस्वामी सहित कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता बड़ी संख्या में शामिल हुए।

आईपीएल के बीच चर्चा में वीडियो

तेलुगू एक्ट्रेस श्रीलीला को डेट कर रहे तिलक वर्मा

नई दिल्ली, एजेंसी

मुंबई इंडियंस और टीम इंडिया के युवा बल्लेबाज तिलक वर्मा एक बार फिर अपनी निजी जिंदगी को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चा में आ गए हैं। इस बार वजह बना है एक वायरल वीडियो, जिसमें सूर्यकुमार यादव मजाकिया अंदाज में तिलक को इन लव कहते सुनाई देते हैं। वीडियो सामने आते ही फैंस इसे तुरंत तेलुगु अभिनेत्री श्रीलीला के साथ जोड़ दिया और सोशल मीडिया पर दोनों के डेटिंग रूमर्स फिर वायरल हो गए।

वायरल क्लिप में तिलक वर्मा होटल लॉबी में हेडफोन लगाकर चलते दिखाई देते हैं। इसी दौरान पीछे से पीछे से सूर्यकुमार यादव उन्हें इन लव

कहकर चिढ़ाते नजर आते हैं। हालांकि सूर्यकुमार ने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन सोशल मीडिया यूजर्स ने तुरंत इसे श्रीलीला से जोड़ा। तिलक वर्मा और श्रीलीला के अफेयर की चर्चा पहली बार तब तेज हुई थी, जब श्रीलीला अपनी मां डॉ. स्वर्णलता के साथ तिरुमाला मंदिर गई थीं। उसी समय के आसपास, तिलक वर्मा को भी कथित तौर पर अपने परिवार के साथ वहां देखा गया था। यही नहीं अभिनेत्री की मां डॉ. स्वर्णलता 14 मई 2026 को धर्मशाला में पंजाब किंग्स के खिलाफ मुंबई इंडियंस के इंडियन प्रीमियर लीग मैच में नजर आईं। ये वही मुकाबला था, जिसमें तिलक वर्मा ने नाबाद 75 रन बनाकर मुंबई इंडियंस को जीत दिलाई सोशल मीडिया पर यह दावा भी वायरल हुआ कि श्रीलीला भी एक क्रिकेट मैच देखने गई थीं, जहां उनकी टीम से जुड़े किसी व्यक्ति ने तिलक नाम की जर्सी पहनी थी। यहीं से तिलक वर्मा और श्रीलीला के रिश्ते को लेकर चर्चाएं तेज हो गई थीं। फैन्स ने सोशल मीडिया पर दोनों की कथित एक्टिविटी को लेकर भी कई दावे किए थे।

युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हैं तिलक वर्मा

तिलक वर्मा आईपीएल 2026 में शानदार प्रदर्शन के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय हो गए हैं। कई फैन पेज उन्हें भारतीय क्रिकेट का %Gen Z क्रश% तक बताते हैं। यही वजह है कि उनकी पर्सनल लाइफ से जुड़ी खबरें भी तेजी से वायरल हो जाती हैं। अब तक न तो तिलक वर्मा और ना ही श्रीलीला ने इन डेटिंग रूमर्स पर कोई प्रतिक्रिया दी है। लेकिन सूर्यकुमार यादव के वायरल वीडियो के बाद सोशल मीडिया पर दोनों की चर्चाएं फिर से तेज हो गई हैं।

एक ही सीजन में ठोके पांच अर्धशतक

21 साल की उम्र में अंगकृष रघुवंशी ने बनाया रिकॉर्ड

कोलकाता। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज अंगकृष रघुवंशी ने बड़ा रिकॉर्ड बनाया है। वह महज 21 साल की उम्र में एक आईपीएल सीजन में सर्वाधिक अर्धशतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं।

21 साल और 345 दिन की उम्र में रघुवंशी ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ महज 33 गेंदों में अर्धशतक पूरा किया, जो उनके आईपीएल करियर का सातवां अर्धशतक था। एक आईपीएल सीजन में 21 साल की उम्र में सबसे ज्यादा अर्धशतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में ऋषभ पंत (साल 2018)

रघुवंशी के पांच अर्धशतक

अंगकृष रघुवंशी ने इस आईपीएल सीजन के अपने पहले ही मैच में मुंबई इंडियंस के खिलाफ 51 रन की पारी खेली थी। इसके बाद उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ 52 रन बनाए। अंगकृष ने तीन मई को सनराइजर्स हैदराबाद के विरुद्ध दूसरे मैच में भी अर्धशतक (59) लगाया, जिसके बाद रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ 71 रन की पारी खेली।

और यशस्वी जायसवाल (साल 2023) शीर्ष पर हैं, जिन्होंने 6-6 बार यह कारनामा किया है। वहीं, देवदत्त पड्डिकल ने साल 2022 में पांच बार ऐसा किया था।

राहुल द्रविड़ ने कोच गंभीर की सोच से जताई असहमति!

बोले- क्रिकेट में सुपरस्टार जरूरी हर एक खेल को चाहिए अपना हीरो

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच और दिग्गज बल्लेबाज राहुल द्रविड़ ने भारतीय क्रिकेट में सुपरस्टार संस्कृति को खत्म करने की बात पर अपनी अलग राय रखी है। मौजूदा हेड कोच गौतम गंभीर लगातार इस बात की वकालत करते रहे हैं कि टीम खेल में व्यक्तिगत उपलब्धियों से ज्यादा टीम की सफलता को महत्व दिया जाना चाहिए। हालांकि, द्रविड़ ने गंभीर की सोच को पूरी तरह गलत नहीं बताया, लेकिन उन्होंने साफ कहा कि हर खेल को अपने हीरो और सुपरस्टार की जरूरत होती है। उनका मानना है कि कोई भी खिलाड़ी बिना शानदार प्रदर्शन के सुपरस्टार नहीं बन सकता।

द्रविड़ ने %स्कूप% पॉडकास्ट पर विजडन से कहा कि भारत जैसे देश में किसी खिलाड़ी को स्टार का दर्जा तभी मिलता है, जब वह लगातार अच्छा प्रदर्शन कर टीम की जीत में योगदान देता है। उन्होंने कहा, %हर खेल को अपने हीरो चाहिए। कोई भी खिलाड़ी बिना प्रदर्शन के लोगों के दिलों में जगह नहीं बना सकता। भारत में आपको जितनी तारीफ मिलती है, उतनी ही आलोचना भी झेलनी पड़ती है। यहां लगातार खिलाड़ियों पर नजर रहती है। इसलिए अगर कोई खिलाड़ी सुपरस्टार बनता है, तो इसका मतलब है कि उसने लंबे समय तक शानदार प्रदर्शन किया है और टीम को जीत दिलाई है।% द्रविड़ उस दौर का हिस्सा रहे हैं, जब भारतीय क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, वीवीएस लक्ष्मण और वीरेंद्र सहवाग जैसे बड़े सितारे थे। इन खिलाड़ियों ने भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

रोहित, विराट की कमी महसूस होगी

द्रविड़ ने हाल के समय में भारतीय टेस्ट टीम के प्रदर्शन पर भी अपनी राय दी। उन्होंने माना कि रोहित शर्मा, विराट कोहली और रविचंद्रन अश्विन जैसे अनुभवी खिलाड़ियों की जगह भरना आसान नहीं है। उन्होंने कहा, %रेड-बॉल क्रिकेट में अच्छा करने का जुनून टीम में मौजूद है। हाल के कुछ सीरीज में भारतीय टीम उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर पाई, लेकिन ऐसा कभी-कभी होता है। कुछ बड़े खिलाड़ी हाल ही में रिटायर हुए हैं और उनकी कमी जरूर महसूस होगी। हालांकि भारतीय क्रिकेट अब भी मजबूत है और मुझे भरोसा है कि टीम हर फॉर्मेट में प्रतिस्पर्धी बनी रहेगी।% द्रविड़ ने यह भी कहा कि मौजूदा समय में काफी ज्यादा व्हाइट-बॉल क्रिकेट खेला जा रहा है, जिससे खिलाड़ियों के लिए अलग-अलग फॉर्मेट में लगातार खुद को ढालना आसान नहीं होता। पूर्व कप्तान को उम्मीद है कि भारतीय टीम आने वाले समय में वापसी करेगी और टेस्ट क्रिकेट में फिर से मजबूत प्रदर्शन करेगी।

सौरव ने बचाया था द्रविड़ का करियर! पूर्व भारतीय कप्तान के बयान से मची हलचल

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने राहुल द्रविड़ को लेकर ऐसा खुलासा किया है, जिसने भारतीय क्रिकेट के पुराने दौर की सबसे बड़ी रणनीतिक चाल को फिर चर्चा में ला दिया है। गांगुली ने बताया कि एक समय ऐसा था जब ओडीआई क्रिकेट में राहुल द्रविड़ की जगह पर सवाल उठने लगे थे और

चयनकर्ता उन्हें बाहर करने पर विचार कर रहे थे। लेकिन उन्होंने पूर्व कप्तान द्रविड़ का साथ नहीं छोड़ा और भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के खिलाफ गए। सौरव गांगुली ने राज शमानी के पॉडकास्ट पर कहा, एक दौर था जब लोग कहते थे कि राहुल द्रविड़ का स्ट्राइक रेट वनडे क्रिकेट के लिए सही नहीं है। चयनकर्ता भी दूसरे खिलाड़ियों को मौका देने की बात करते थे। लेकिन मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा क्योंकि अगर मैं छोड़ देता तो शायद उनका करियर खत्म हो जाता।

द्रविड़ को क्यों करनी पड़ी कीपिंग?

सौरव गांगुली ने बताया, हमारे पास ऐसा विकेटकीपर नहीं था, जो बल्लेबाजी कर सके। इसलिए हमने द्रविड़ को विकेटकीपर बनाया। इससे हम अतिरिक्त बल्लेबाज खिला सकें। इस फैसले की वजह से भारत को मिडिल ऑर्डर में ज्यादा मजबूती मिली और मोहम्मद कैफ जैसे खिलाड़ियों की प्लेइंग-11 में जगह बनी। राहुल द्रविड़ को विकेटकीपर बनाने का प्रयोग सिर्फ अस्थायी नहीं था। यही रणनीति 2003 क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत की सफलता की सबसे बड़ी वजहों में से एक बनी, जहां टीम फाइनल तक पहुंची थी।

बिना दर्शकों के आईपीएल मुकाबले कराने की मांग,

सीटीआई ने खेल मंत्री को लिखा पत्र, कहा बचेगा पेट्रोल-डीजल

मीरपुर, एजेंसी

31 मार्च से शुरू हुए इंडियन प्रीमियर लीग के 19वें सीजन में अब तक टीमों ने हवाई रास्ते से और सड़क मार्ग से करीब लाखों किलोमीटर तय कर लिए होंगे। जिस तरह से टीमों का शेड्यूल है और जिस तरह से अलग-अलग शहरों में उनके मैच रखे गए हैं, उस लिहाज से यह ट्रैवल जायज है। लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में ये हवाई यात्राएं भारत सरकार पर अतिरिक्त दबाव डाल सकती हैं। जहां हर एक सरकारी विभाग, राजनेता, अधिकारी, सामान्य नागरिक, प्रधानमंत्री मोदी की सलाह पर फिजूलखर्ची से बचने की कोशिश कर रहे हैं वहीं इस मुश्किल वक्त में सिर्फ क्रिकेट ही ऐसा आयोजन है जो फिलहाल किसी भी संकट से अछूता नजर आ रहा है,

दिल्ली और देश में व्यापारियों और उद्यमियों के शीर्ष संगठन चैंबर ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री के चेयरमैन बृजेश गोयल ने रविवार (17 मई) को इस मुद्दे पर केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया को एक पत्र लिखा है। बृजेश ने मांग की है कि हवाई यात्रा में कटौती करते हुए आईपीएल के बचे हुए मैचों के लिए नया शेड्यूल जारी किया जाए और सीमित मैदानों पर बिना दर्शकों के IPL के बाकी मैच कराए जाएं।

क्या बिन दर्शकों के होंगे मुकाबले?

इससे लाखों लीटर ईंधन, पेट्रोल डीजल बचेगा और देश पर बोझ कम पड़ेगा। कोरोना काल में भी आयोजकों ने सीमित मैदानों पर क्रिकेट का सफल आयोजन कराया था। इसके अलावा आईपीएल के बाकी मैच बिना दर्शकों के भी हो सकते हैं क्योंकि एक मैच में औसतन पचास हजार दर्शक आते हैं, जिससे कि हजारों लीटर पेट्रोल-डीजल खर्च होता है। CTI के मुताबिक आईपीएल टीमों के लिए आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले चार्टर्ड विमान जैसे बोइंग 737 या एयरबस A 320 औसतन लगभग 2400 से 3000 लीटर प्रति घंटा ईंधन खर्च करते हैं। इस हिसाब से यदि फ्लाइट लगभग 2 घंटे उड़ती है तो अनुमानित खपत करीब 5000 से 6000 लीटर एविएशन फ्यूल ATF होती है। अगर विमान थोड़ा बड़ा हो या लंबी दूरी के लिए ज्यादा वजन लेकर उड़ रहा हो तो यह आंकड़ा 7000 से 8000 लीटर तक भी जा सकता है। अब ईंधन के इस खर्च को टीमों के करीब 10 हवाई यात्रा से गुना कर दिया जाए तो कह सकते हैं कि हर टीम करीब 50000 से 70000 लीटर एविएशन फ्यूल खर्च कर रही है।

मनोरंजन **बॉलीवुड का कोना**

पिता ने की 4 शादियां-मां ने नहीं की रोक-टोक

आजाद परिवार में हुई एक्ट्रेस पूजा की परवरिश, बोली- क्रांति जैसा माहौल

एक्ट्रेस पूजा बेदी एक समय पर इंडस्ट्री का चर्चित चेहरा थीं। पूजा को अपने बोल्ड लुक्स और स्टाइल स्टेटमेंट को लेकर खास पहचान मिली। मगर अपने करियर के पीक पर उन्होंने एक्टिंग छोड़कर शादी करने का फैसला किया था। अब पूजा ने अपने बचपन और परवरिश पर खुलकर बात की है। पूजा बेदी ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि कैसे उनके पिता और एक्टर कबीर बेदी और मां प्रोतिमा बेदी ने उन्हें पूरी आजादी के साथ पाला। उनपर कोई पाबंदी नहीं लगाई। दिलचस्प बात यह है कि पूजा ने कहा कि इतने खुले माहौल में पली-बढ़ी होने के बावजूद आगे चलकर वो खुद अपने बच्चों के लिए काफी सख्त मां बनीं।

जोस अल्कुकास के यूट्यूब चैनल पर बातचीत के दौरान पूजा ने बताया

कि उनकी मां चाहती थीं उनके बच्चे इतने स्ट्रॉन्ग होने चाहिए कि वो खुद के लिए फैसला कर सकें। अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए पूजा ने कहा- मैं एक ऐसे परिवार में बड़ी हुई हूं, जो अल्ट्रा-बोहेमियन यानी पुरानी परंपराओं से पूरी तरह से दूर था। मुझे लगता है कि भारत में फ्लावर पावर मूवमेंट (शांति और आजादी के आंदोलन) की शुरुआत मेरे माता-पिता ने ही की थी। वो पूरा दौर ही जैसे सेक्स, ड्रग्स और रॉक एंड रोल क्रांति जैसा माहौल था। पूजा बेदी ने बताया कि उनके उन्होंने बताया कि उनके माता-पिता ने उन पर कभी किसी खास प्रोफेशन या लाइफस्टाइल को अपनाने का दबाव नहीं डाला।

स्ट्रिक्ट मां हैं पूजा

दिलचस्प बात यह है कि पूजा ने कहा कि भले ही वो उनके माता-पिता ने उन्हें खूब आजादी दी, लेकिन उनका बच्चों की पालने का तरीका उनकी मां से काफी अलग रहा। पूजा बोलीं- मैं बहुत सख्त मां हूं। मुझे लगता है कि हर पीढ़ी बीच की दो पीढ़ियों को छोड़ देती है और फिर वही नियम चलाने वाली मां वापस आ जाती है। पूजा की बात करें तो उनकी मां प्रोतिमा बेदी अपने दौर की फेमस मॉडल और क्लासिकल डांसर थीं। पूजा के पिता कबीर बेदी भी फेमस इंडियन एक्टर हैं। हालांकि, कबीर बेदी अपनी मैरिड लाइफ को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। उन्होंने 1 या 2 नहीं बल्कि 4 शादियां की हैं।

विजय के सीएम बनने पर रजनीकांत ने तोड़ी चुप्पी, कहा- मैं हैरान था, पीसी में दी सफाई

तमिल सिनेमा के महानायक रजनीकांत ने रविवार सुबह चेन्नई के पोएस गार्डन स्थित अपने आवास पर एक अचानक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई। तमिलनाडु चुनाव के नतीजे आने के बाद से ही रजनीकांत की चुप्पी को लेकर मीडिया और राजनीतिक गलियारों में तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे। जिसका जवाब सुपरस्टार ने खुद दिया है।

दरअसल इन चुनावों में साउथ के एक और बड़े स्टार सी। जोसेफ विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कझगम% को ऐतिहासिक जीत मिली है। रजनीकांत की खामोशी को देखकर कुछ लोगों का दावा था कि वह इन चुनावी नतीजों से खुश नहीं हैं, तो वहीं कुछ लोग यह अफवाह उड़ा रहे थे कि वे पार्टियों का विलय (स्र्हह्वद्दह्व) करने की कोशिश में जुटे हैं। अब इन तमाम अटकलों और आलोचनाओं पर खुद थलाइवा ने सामने आकर बेहद कड़े शब्दों में अपनी बात रखी है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस की शुरुआत करते हुए रजनीकांत ने साफ कहा कि अगर वह आज चुप रह जाते, तो झूठ को ही सच मान लिया जाता। उन्होंने कहा, मैं यह प्रेस मीट इसलिए कर रहा हूं क्योंकि चुनावों को लेकर मेरे बारे में सोशल मीडिया और मीडिया में कई

तरह की मनगढ़ंत बातें कही जा रही हैं। चुनाव नतीजों के आने के बाद मैं एम।के। स्टालिन से मिलने गया था, जिसे बेवजह आलोचना का विषय बना दिया गया। लोगों को समझना होगा कि हमारी दोस्ती राजनीति के दायरे से बहुत ऊपर है। मुझे व्यक्तिगत रूप से इस बात का बेहद दुख हुआ कि एम।के। स्टालिन कुलाथुर सीट से चुनाव हार गए। रजनी कोई इतना सस्ता या घटिया दर्जे का इंसान नहीं है जो किसी भी बात पर राजनीति करे या बेवजह की बातें बनाए।

मेट्रो बाजार

भारतीय शेयर बाजार में शीर्ष कंपनियों का मार्केटकैप 3.12 लाख करोड़ रुपए कम हुआ

मुंबई। भारतीय शेयर बाजार में पिछले हफ्ते शीर्ष 10 कंपनियों में से नौ का मार्केटकैप 3.12 लाख करोड़ रुपए कम हो गया है। इसकी वजह घरेलू बाजारों में तेज बिकवाली और वैश्विक अस्थिरता के चलते डॉलर के मुकाबले रुपए पर दबाव बने रहना है। 11-15 मई के कारोबार के दौरान सेंसेक्स 2,090 अंक या 2.70 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 75,237 और निफ्टी 532 अंक या 2.20 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 23,643 पर था।

शीर्ष 10 में से केवल एक कंपनी के मार्केटकैप में बढ़त दर्ज की गई है। भारती एयरटेल का मार्केटकैप 42,470.13 करोड़ रुपए बढ़कर 11,60,525.16 करोड़ रुपए हो गया है। दूसरी तरफ, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया का मार्केटकैप 52,245.3 करोड़ रुपए घटकर 8,88,862.32 करोड़ रुपए हो गया। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज का बाजार पूंजीकरण 47,415.04 करोड़ रुपए घटकर 8,19,062.65 करोड़ रुपए हो गया, जबकि बजाज फाइनेंस का मूल्यांकन 27,892.28 करोड़ रुपए घटकर 5,66,717.74 करोड़ रुपए हो गया।

एचडीएफसी बैंक का बाजार मूल्यांकन 20,630.01 करोड़ रुपए घटकर 11,82,069.25 करोड़ रुपए हो गया। इसी तरह, आईसीआईसीआई बैंक के बाजार पूंजीकरण में 14,290 करोड़ रुपए की गिरावट आई, जिससे कंपनी मार्केटकैप 8,92,385.39 करोड़ रुपए पर पहुंच गया है।

अदाणी ग्रुप अगले 4 साल में बिहार के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर करेगा 60,000 करोड़ रुपए तक का निवेश

पटना। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने कहा कि हमारा लक्ष्य अगले तीन से चार वर्षों में बिहार राज्य के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 50,000 करोड़ रुपए से लेकर 60,000 करोड़ रुपए तक का निवेश करना है। उन्होंने सारण के मस्तीचक में %अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल- अदाणी सेंटर फॉर आई डिजीज के उद्घाटन के दौरान बिहार को लेकर अदाणी ग्रुप की प्रोजेक्ट्स का जिक्र करते हुए कहा, हमने भागलपुर जिले के पीरपैंती में 2,400 मेगावाट पावर प्रोजेक्ट्स का शिलान्यास किया है। इस प्रोजेक्ट्स पर तेजी से काम चल रहा है। साथ ही रोड प्रोजेक्ट पर भी काम चल रहा है। उन्होंने आगे कहा, हमारा लक्ष्य बिहार की प्रगति और इन्फ्रास्ट्रक्चर पर अगले तीन से चार वर्षों में बिहार राज्य के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 50,000 करोड़ रुपए से लेकर 60,000 करोड़ रुपए तक का निवेश करना है।% गौतम अदाणी ने कहा कि बिहार की ग्रोथ का समय आ गया है। बिहार में इन्फ्रास्ट्रक्चर की काफी आवश्यकता है। साथ रोड, इन्फ्रास्ट्रक्चर और औद्योगिकीकरण की भी काफी जरूरत है। इस समय का बिहार की जनता को पूरा लाभ उठाना चाहिए।

गौतम अदाणी सारण के मस्तीचक में अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल- अदाणी सेंटर फॉर आई डिजीज के उद्घाटन और नए परिसर के भूमिपूजन के लिए बिहार पहुंचे थे। उनके साथ अदाणी फाउंडेशन की चेयरपर्सन और उनकी पत्नी प्रीति अदाणी भी थीं। इस दौरान उन्होंने कहा कि आज बिहार की इस पावन धरती, खासकर मस्तीचक आकर मुझे बहुत खुशी और गौरव महसूस हो रहा है। यह भूमि सिर्फ एक राज्य नहीं, बल्कि भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। यहां गायत्री शक्तिपीठ के दर्शन से मुझे असीम शांति मिली है और गायत्री मंत्र का जाप मन को शांति प्रदान करता है और यहां आकर मुझे समाज के लिए कुछ बेहतर करने की प्रेरणा मिली है।

जय रुद्रनाथ!

भक्ति और आस्था के संग रवाना हुई पावन पालकी यात्रा

भगवान रुद्रनाथ की दिव्य पालकी यात्रा जब गोपेश्वर स्थित गोपीनाथ मंदिर से अपने शीतकालीन प्रवास से मंदिर की ओर रवाना हुई, तब पूरा वातावरण भक्तिमय जयकारों और श्रद्धा से गूंज उठा। हजारों श्रद्धालुओं ने ढोल-दमाऊं और वैदिक मंत्रोच्चार के बीच भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। देवभूमि उत्तराखंड की यह प्राचीन परंपरा आस्था, संस्कृति और सनातन विश्वास का अद्भुत संगम है। 'हर हर महादेव' के उद्घोष के साथ निकली यह यात्रा भक्तों के हृदय में भक्ति और ऊर्जा का संचार कर रही है।

न्यूज विंडो

इंडोनेशिया में माउंट डुकोनो ज्वालामुखी फटा, 5,000 मीटर तक उड़ी राख

जकार्ता। इंडोनेशिया के नॉर्थ मालुकू प्रांत में स्थित डुकोनो ज्वालामुखी रविवार को फट गया। देश के सेंटर फॉर वोल्केनोलॉजी एंड जियोलॉजिकल हैजर्ड मिटिगेशन ने बताया कि इस विस्फोट के बाद ज्वालामुखी की चोटी से 5,000 मीटर ऊपर तक राख निकली। यह 1,087 मीटर ऊंचा ज्वालामुखी अभी दूसरे सबसे उच्च अलर्ट स्तर पर है। अधिकारियों ने लोगों और पर्यटकों से कहा है कि वे क्रेटर (मुख्य गड्ढे) के चार किलोमीटर के दायरे में कोई गतिविधि न करें और राख से होने वाली सांस की परेशानियों से बचने के लिए मास्क पहनने के लिए तैयार रहें। इस महीने की शुरुआत में, माउंट डुकोनो के फटने से तीन लोगों की मौत हो गई थी। इसके बाद 15 लोग सुरक्षित पाए गए, जिनमें सात सिंगापुर और आठ इंडोनेशिया के नागरिक शामिल थे। ज्वालामुखी की गतिविधि और भारी मात्रा में ज्वालामुखीय सामग्री के नीचे शव दबे होने की वजह से बचाव कार्य में देरी हुई। बाद में शवों को टोबेलो रीजनल हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां उनकी पहचान और आगे की प्रक्रिया की गई। इंडोनेशिया की राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (बीएनपीबी) ने इस बात पर दुख जताया कि लोगों ने उस समय भी वहां चढ़ाई की, जबकि माउंट डुकोनो का ट्रेकिंग रूट 17 अप्रैल से पूरी तरह बंद था।

25 मई को पद्म पुरस्कार 2026 प्रदान करेंगी राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 25 मई को वर्ष 2026 के पद्म पुरस्कार प्रदान करेंगी। गृह मंत्रालय ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए यह जानकारी दी। मंत्रालय के अनुसार, राष्ट्रपति भवन में आयोजित होने वाले पहले नागरिक अलंकरण समारोह में राष्ट्रपति पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री पुरस्कार प्रदान करेंगी। इस वर्ष भारत सरकार ने कुल 131 पद्म पुरस्कारों की घोषणा की है। इनमें 5 पद्म विभूषण, 13 पद्म भूषण और 113 पद्म श्री पुरस्कार शामिल हैं। पुरस्कार पाने वालों में 19 महिलाएं शामिल हैं, जबकि 16 लोगों को मरणोपरांत सम्मान दिया जाएगा। पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में शामिल हैं। वर्ष 1954 में शुरू किए गए ये पुरस्कार हर साल गणतंत्र दिवस के अवसर पर घोषित किए जाते हैं। इन पुरस्कारों का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट और उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करना है। कला, साहित्य, शिक्षा, खेल, चिकित्सा, सामाजिक कार्य, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग, लोक प्रशासन तथा व्यापार एवं उद्योग जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए ये सम्मान दिए जाते हैं।

पीएम के बयान पर कांग्रेस नेता बंसल का तंज, कहा-पहले के कामों को स्वीकार तो किया

चंडीगढ़। कांग्रेस नेता पवन बंसल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वैश्विक हालात पर चिंता जताए जाने और त्वरित कदम न उठाने पर पिछले दशकों की उपलब्धियों को खो देने की चेतावनी पर रविवार को तंज कसा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने कम से कम पिछले दशकों की उपलब्धियों को स्वीकार तो किया है। कांग्रेस नेता पवन बंसल ने कहा, शुक्र है कि पीएम मोदी ने पिछले दशकों की बात की, सिर्फ पिछले दशक की नहीं। पहले ऐसी बातें होती थीं कि 2014 से पहले भारत में कुछ था ही नहीं, भारत 2014 में बना। पहली बार मैंने देखा कि वे उसके पहले की भी बात कर रहे हैं। इससे साफ है कि उन्होंने माना कि पहले भी काम होता रहा, जिससे देश मजबूत हुआ। बंसल ने पीएम मोदी के बयान को निराशाजनक बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री को देश की वर्तमान स्थिति का एहसास है। उन्होंने कहा, भारत में क्या हो रहा है, हमें वह देखने की जरूरत है। रुपए की कीमत कितनी गिर गई है, यह किसी से छिपा नहीं है। बेरोजगारी भयंकर बढ़ी है। बड़ी तादाद में ग्रेजुएट बेरोजगार बैठे हैं। अब तो नया पैटर्न सामने आया है कि नीट के पेपर लीक हो रहे हैं।

युद्ध की आग में फिर झुलसेगा मिडिल ईस्ट?

यूएस मीडिया का दावा- ईरान पर हमला कर सकते हैं ट्रंप

नई दिल्ली, एजेंसी

मिडिल ईस्ट में शांति की जो थोड़ी-बहुत उम्मीद दिख रही थी, अब उस पर फिर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं। अमेरिका और ईरान के बीच सीजफायर लागू होने के बाद लोगों को लगा था कि शायद अब हालात संभल जाएंगे। लेकिन अब ऐसी खबरें सामने आ रही हैं, जिसने एक बार फिर दुनिया की टेंशन बढ़ा दी है। अमेरिकी मीडिया का दावा है कि अगर अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत फेल हुई, तो आने वाले दिनों में हालात फिर विस्फोटक हो सकते हैं। यानी जिस जंग पर फिलहाल ब्रेक लगा दिख रहा है, वह फिर भड़क सकती है। दरअसल, दोनों देशों के बीच पेंच ईरान की उन 5 शर्तों पर आकर फंसा है, जिसे मानने से अमेरिका कतरा रहा है।

इस महायुद्ध की आहट को हवा दी है खुद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की एक सोशल मीडिया पोस्ट ने। उन्होंने एक AI तस्वीर शेयर की, जिसमें वह मेक अमेरिका ग्रेट अगेन वाली लाल टोपी पहने एक अमेरिकी नौसेना अधिकारी के साथ युद्धपोत पर खड़े दिखे। पीछे समुद्र में तनाव का माहौल और ईरानी जहाज नजर आ रहे थे। इस तस्वीर के साथ ट्रंप ने लिखा, तूफान से पहले की शांति। इसके बाद चर्चा तेज हो गई कि क्या अमेरिका किसी बड़े एक्शन की तैयारी में है। उधर, ट्रंप लगातार ईरान को चेतावनी भी दे रहे हैं।

क्या फिर शुरू होने वाला है बड़ा युद्ध?

न्यूयॉर्क टाइम्स के दावों के मुताबिक, व्हाइट हाउस और अमेरिकी सेना के भीतर ईरान को लेकर कई विकल्पों पर चर्चा हो रही है। कहा जा रहा है कि एक प्लान ईरान के सैन्य ठिकानों और जरूरी ढांचे पर बड़े हवाई हमले का है। वहीं दूसरा विकल्प ज्यादा बड़ा और खतरनाक माना जा रहा है, जिसमें ईरान के यूरेनियम स्टोरेज सेंटर को निशाना बनाया जा सकता है। हालांकि, ईरान ने भी संयुक्त राष्ट्र में सख्त चेतावनी दी है। ईरान का कहना है कि अगर अमेरिका हमला करता है, तो उसका समर्थन करने वाले देशों को भी इसके नतीजों की जिम्मेदारी उठानी होगी। साथ ही खबरें ये भी हैं कि अमेरिका मिडिल ईस्ट में अपने सैनिकों और सैन्य सामान की तैनाती को लेकर नई तैयारी कर रहा है।

ईरान की इन 5 शर्तों की वजह से नहीं बन रही बात

- **ईरान** की पहली मांग है कि लेबनान समेत तमाम मोर्चों पर जारी सैन्य संघर्ष और लड़ाई को तुरंत पूरी तरह से रोका जाए।
- **ईरान** चाहता है कि बातचीत आगे बढ़ाने से पहले अमेरिका उस पर लगाए गए सभी आर्थिक और व्यापारिक प्रतिबंधों को पूरी तरह हटाए।
- **ईरान** ने मांग रखी है कि विदेशों में रोकी गई उसकी सारी संपत्ति और जमे हुए फंड को बिना किसी देरी के तुरंत जारी किया जाए।
- **ईरान** का कहना है कि इस पूरी जंग में उसे जो भी भारी माली और सैन्य नुकसान हुआ है, अमेरिका को उसकी पूरी भरपाई करनी होगी।
- **तेल** सप्लाई के लिए दुनिया के सबसे अहम रास्ते यानी स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर ईरान अपनी संप्रभुता चाहता है और अमेरिका को इसे मान्यता देनी होगी।

अल्पसंख्यक रणनीति में बदलाव के संकेत

केरल में भाजपा की नई रणनीति, पिछड़े हिंदू वर्गों पर बढ़ा फोकस

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

केरल विधानसभा चुनाव में तीन सीटों पर जीत से उत्साहित भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अब राज्य में अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत करने के लिए 13 सूत्रीय रणनीति तैयार की है। पार्टी का फोकस खास तौर पर हिंदू पिछड़े वर्गों (ओबीसी) के बीच समर्थन बढ़ाने और अपनी राजनीतिक पहुंच को नए तरीके से मजबूत करने पर दिखाई दे रहा है। यह रणनीति शनिवार को हुई भाजपा की राज्य कोर कमेटी की बैठक में पारित राजनीतिक प्रस्ताव का हिस्सा रही। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने की।

भाजपा ने अपने प्रस्ताव में साफ किया है कि ओबीसी आरक्षण को धर्म आधारित आरक्षण में बदलने की अनुमति नहीं दी जाएगी। पार्टी का कहना है कि आरक्षण केवल ओबीसी, एससी/एसटी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) तक सीमित रहना चाहिए। राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि भाजपा पिछड़े वर्गों के आरक्षण को धर्म आधारित आरक्षण में बदलने की किसी भी कोशिश का विरोध करेगी। भाजपा अब केरल के प्रभावशाली एझवा समुदाय सहित कई हिंदू पिछड़े वर्गों के बीच अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश कर रही है।

पार्टी की रणनीति में दिख रहे बदलाव के संकेत

भाजपा ने हाल के चुनावों से पहले ईसाई समुदाय के साथ संबंध मजबूत करने की कोशिश की थी, लेकिन अब पार्टी की रणनीति में बदलाव के संकेत दिख रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, चर्च नेतृत्व और कांग्रेस नेतृत्व वाले यूडीएफ के बीच बढ़ती नजदीकियों के बाद भाजपा ने संस्थागत स्तर पर चर्च से संवाद की कोशिशों को कम कर दिया है। हालांकि पार्टी का कहना है कि ईसाई समुदाय से उसका संवाद पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है और कई जिलों में पार्टी संगठन में ईसाई सदस्य सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

सबरीमाला व मंदिरों का मुद्दा भी एजेंडे में

भाजपा ने अपने प्रस्ताव में सबरीमाला मुद्दे को फिर प्रमुखता से उठाया है। पार्टी ने सबरीमाला से जुड़े कथित सोना घोटाले की सीबीआई जांच की मांग की है। इसके साथ ही मंदिरों की संपत्तियों और परिसंपत्तियों के ऑडिट की मांग भी की गई है। पार्टी ने सबरीमाला महिला प्रवेश विरोध प्रदर्शन के दौरान दर्ज मामलों को वापस लेने की भी मांग उठाई।

शॉर्ट सर्किट की आशंका, एक बोगी जली

सासाराम रेलवे स्टेशन पर पटना पैसेंजर ट्रेन में लगी आग

रोहतास, एजेंसी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय-गया रेलखंड के सासाराम रेलवे स्टेशन पर उस वक्त अफरा-तफरी मच गई, जब एक सवारी गाड़ी अचानक धधक उठी। सासाराम से आरा होकर पटना जाने वाली पैसेंजर ट्रेन में अचानक आग लगने से प्लेटफॉर्म और ट्रेन में बैठे यात्रियों में हड़कंप मच गया और लोग इधर-उधर भागने लगे। घटना सोमवार की सुबह करीब छह बजे की बताई जा रही है।

व्यवस्था की कमी का आरोप: प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि प्रबंधन की नाकामी के कारण ट्रेन को ज्यादा नुकसान हुआ। अगर समय रहते आग बुझाने के लिए पानी और अग्निशमन यंत्रों का प्रयोग किया गया होता, तो ट्रेन को नुकसान होने से बचाया जा सकता था। लोगों ने बताया कि ट्रेन में रिफिलिंग के लिए बिछाई गई पाइपलाइन में न तो पानी था और न ही रेलवे के अग्निशमन सिलेंडरों में गैस थी। रेलवे प्रबंधन की लापरवाही के कारण शुरुआती समय में आग पर काबू नहीं पाया जा सका और देखते ही देखते ट्रेन की बोगियां धधक उठीं।

लखीमपुर खीरी में भीषण हादसा

हाईवे पर ट्रक और मैजिक की भिड़ंत, आठ लोगों की मौत, दो से अधिक घायल

लखीमपुर खीरी, एजेंसी। लखीमपुर-बहराइच नेशनल हाईवे 730 पर सोमवार सुबह हुए भीषण सड़क हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में छह पुरुष और दो महिलाएं बताई जा रही हैं। हादसा ट्रक और मैजिक गाड़ी की टक्कर से हुआ। हादसे में कई लोग घायल हुए हैं। घायलों का नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

सुबह आठ बजे हुआ हादसा: सुबह करीब आठ बजे हुए भीषण हादसे ने अधिकारियों की नींद भी उड़ा दी। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर भारी पुलिस फोर्स पहुंचा। मौके पर बचाव कार्य शुरू किया। घायलों को सीएचसी खमरिया में पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों ने आठ घायलों को मृत घोषित कर दिया। घायलों का इलाज किया जा रहा है।

नानपारा जा रहे थे मजदूर

पुलिस के मुताबिक मैजिक सवार सभी यात्री लखीमपुर से मजदूरी कर अपने गांव नानपारा वापस जा रहे थे। ये लोग गांव पहुंचते इससे पहले ही हादसे में उनकी मौत हो गई। मैजिक लखीमपुर से सिसैया जा रही थी, जबकि ट्रक बहराइच की ओर से आ रहा था। फिलहाल पुलिस मृतकों की पहचान करने में जुट गई है।

मेट्रो एंकर | **क्लाइमेट चेंज या कंक्रीट का जाल?**

दिल्ली-एनसीआर में मौसम के सारे अनुमान फेल

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली के मौसम में लगातार बढ़ती अनिश्चितता और अचानक बदलते हालात पर पूर्व आईएमडी निदेशक आनंद शर्मा ने विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि मई और प्री-मानसून का मौसम हमेशा से तेजी से बदलने वाला रहा है, लेकिन अब अर्बन हीट आइलैंड और क्लाइमेट चेंज के असर भी साफ दिखाई देने लगे हैं। उन्होंने बताया कि दिल्ली में गर्मी के मौसम के दौरान दोपहर के समय तापमान तेजी से बढ़ता है। अगर उसी दौरान वातावरण में नमी आ जाए तो थंडरस्टॉर्म और तेज बारिश जैसी स्थितियां बन जाती हैं। वहीं, केवल तेज गर्मी होने पर कन्वेक्शनल करंट्स विकसित होते हैं, जिनसे डस्ट स्टॉर्म पैदा हो सकते हैं।

आनंद शर्मा के मुताबिक, हर साल मौसम का पैटर्न एक जैसा नहीं होता। कुछ सालों में तापमान सामान्य से ज्यादा रहता है, जबकि कुछ सालों में धूल भरी आंधियां और थंडरस्टॉर्म अधिक देखने को मिलते हैं। उन्होंने कहा कि तेजी से बढ़ते शहरीकरण और कंक्रीट के विस्तार ने भी मौसम को प्रभावित किया है।

उन्होंने अर्बन हीट आइलैंड प्रभाव को समझाते हुए कहा कि शहर के कुछ हिस्सों में तापमान आसपास के इलाकों की तुलना में 2-3 डिग्री ज्यादा हो सकता है। इसकी वजह कंक्रीट की इमारतें, डामर की सड़कें, कम हरियाली और अधिक वाहन हैं। ये सतहें सूरज की गर्मी को सोख लेती हैं और बाद में उसे छोड़ती हैं, जिससे दिन और रात दोनों समय तापमान अधिक बना रहता है। पूर्व IMD निदेशक ने कहा कि वर्तमान में दिल्ली का तापमान सामान्य सीमा के आसपास ही है, लेकिन अगर अचानक नमी आ जाए और थंडरस्टॉर्म बन जाए तो तापमान कुछ ही मिनटों में 24-25 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है।

क्लाइमेट चेंज पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले 100 सालों में पृथ्वी का तापमान लगभग 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। इसका असर एक्सट्रीम वेदर घटनाओं पर भी दिखने लगा है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया कि हर मौसमीय बदलाव को सीधे क्लाइमेट चेंज से जोड़ना सही नहीं होगा। कई बदलाव प्राकृतिक जलवायु परिवर्तनशीलता के कारण भी होते हैं।

उन्होंने कहा कि अगर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन इसी तरह जारी रहा और शहरों में कंक्रीट का विस्तार बढ़ता गया तो भविष्य में हीट वेव, तेज आंधी, भारी बारिश और बिजली गिरने जैसी घटनाओं की आवृत्ति बढ़ सकती है।

बिजली गिरने की घटनाओं पर उन्होंने कहा कि पहले भी बिजली गिरती थी, लेकिन अब रिपोर्टिंग ज्यादा बेहतर और तेज हो गई है। साथ ही, अर्बन हीट आइलैंड प्रभाव और स्थानीय मौसमीय बदलावों के कारण कुछ इलाकों में लाइटनिंग गतिविधियों की तीव्रता बढ़ने की संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक **राजेश सिरोठिया** द्वारा पी जी इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,करोंद-भानपुर बाइपास विलेज रासलाखेड़ी भोपाल से मुद्रित तथा ए-182 मनीषा मार्केट शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। **संपादक राजेश सिरोठिया**
स्थानीय संपादक अनिल शर्मा* आर एन आई पंजीयन क्रमांक एमपी एचआईएन/2016/68849 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) **फोन :** 0755-7963564